ज्ञानामृत

अगस्त, 1983
वर्ष 19 ❋ अंक2

मूल्य 1.35

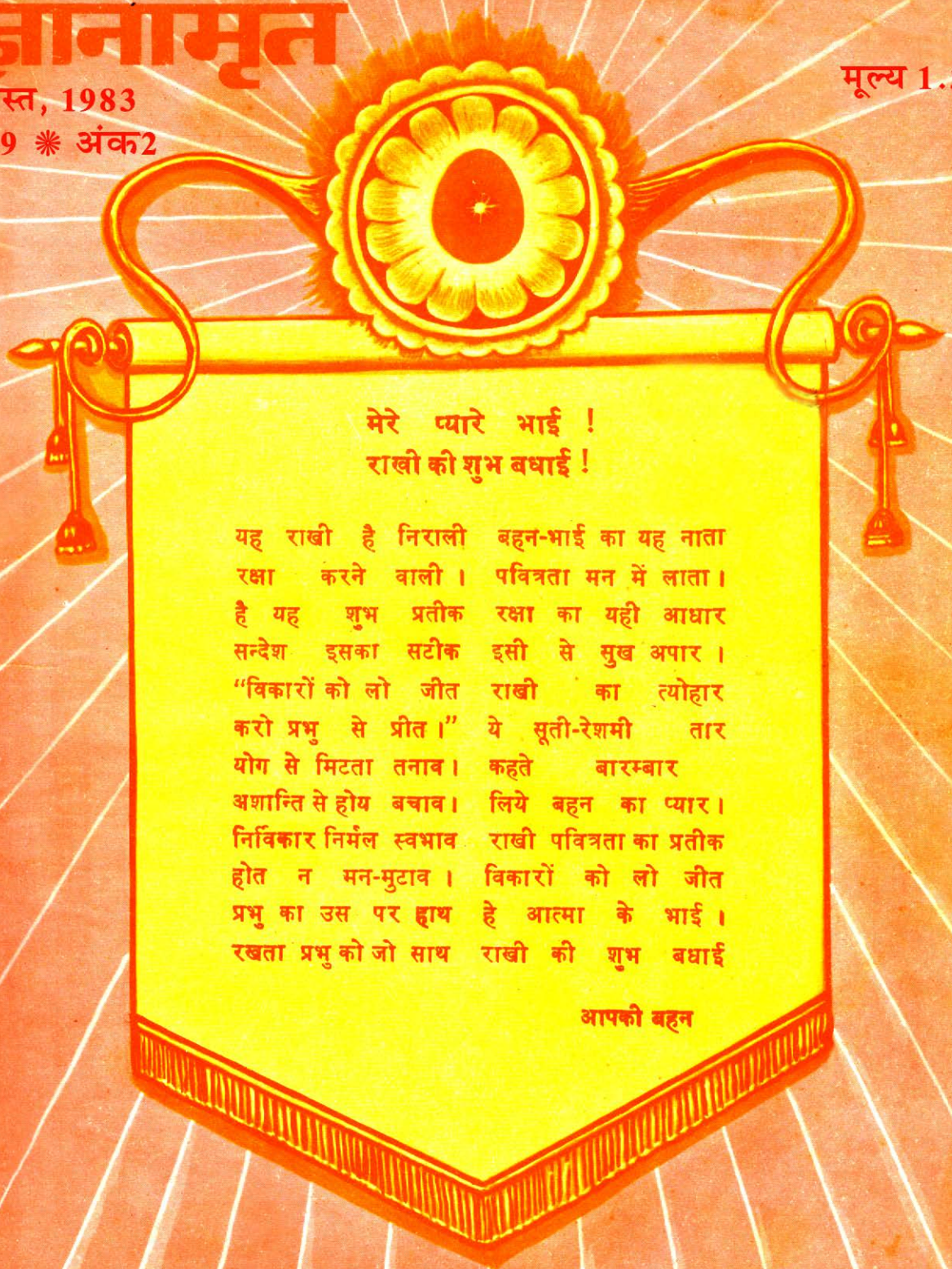

मेरे प्यारे भाई !
राखी की शुभ बधाई !

यह राखी है निराली बहन-भाई का यह नाता
रक्षा करने वाली । पवित्रता मन में लाता ।
है यह शुभ प्रतीक रक्षा का यही आधार
सन्देश इसका सटीक इसी से सुख अपार ।
"विकारों को लो जीत राखी का त्योहार
करो प्रभु से प्रीत ।" ये सूती-रेशमी तार
योग से मिटता तनाव । कहते बारम्बार
अशान्ति से होय बचाव । लिये बहन का प्यार ।
निर्विकार निर्मल स्वभाव राखी पवित्रता का प्रतीक
होत न मन-मुटाव । विकारों को लो जीत
प्रभु का उस पर हाथ हे आत्मा के भाई ।
रखता प्रभु को जो साथ राखी की शुभ बधाई

आपकी बहन

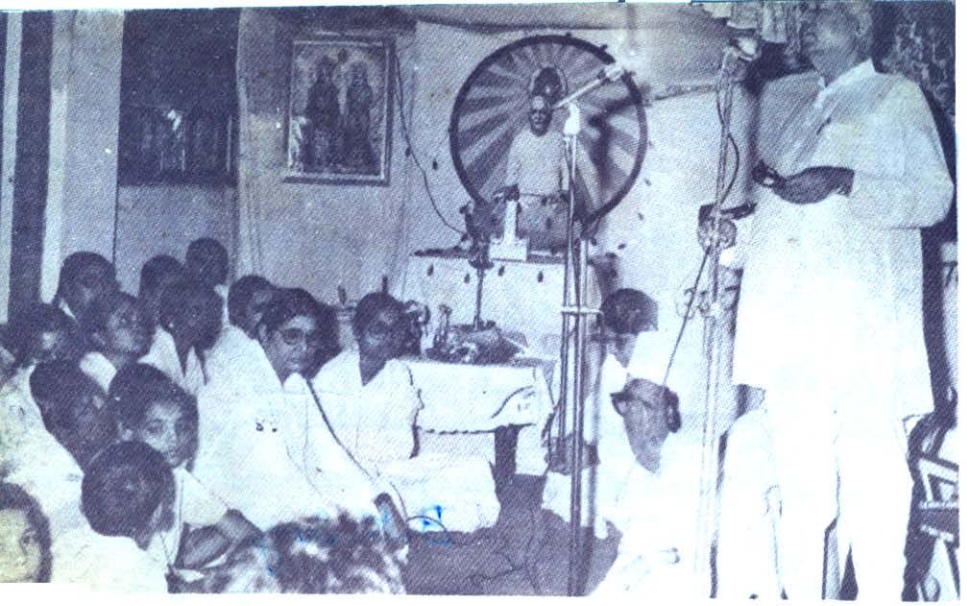

सांगली सेवा केन्द्र के वार्षिक उत्सव के अवसर पर महाराष्ट्र के मुख्यमन्त्री भ्राता बसन्त दादा पाटिल अपने विचार प्रकट करते हुए। उन्होंने संस्था द्वारा की जा रही सेवाओं की सराहना की। उन की दायीं ओर ब्र. कु. सुन्दर विराजमान हैं।

कलकत्ता में भ्राता ए. एन. सेन, न्यायाधीश उच्चतम न्यायालय, नई दिल्ली, अपनी आबू यात्रा के अनुभव वर्णन करते हुए।

काठमाण्डो (नेपाल) में भारत के राजदूत भ्राता एच. सी. सरीन को ब्र. कु. राज तथा शीला श्री लक्ष्मी श्री नारायण का चित्र तथा आध्यात्मिक साहित्य भेंट करते हुए।

साऊथ एक्सटेन्शन नई दिल्ली स्थित आध्यात्मिक संग्रहालय में डाक्टरों के लिए एक आध्यात्मिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। चित्र में ब्र. कु. शान्ति, डा. एल. एस. माथुर के साथ अन्य डाक्टर तथा ब्र. कु. भाई बहन खड़े हैं।

असम के उपमन्त्री भ्राता कुलबहादुर सिंह को आध्यात्मिक प्रदर्शनी के चित्रों की व्याख्या करती हुई ब्र. कु. आशा जी।

नीमच में पत्रकार संघ नीमच द्वारा आयोजित व्याख्यान माला में ब्र. कु. किरण अपने विचार प्रकट करते हुए। (बाएं से) पं. मोतीलाल शर्मा, बाल कवि बैरागी, कन्हैयालाल डुंगरलाल, लाडली मोहन निगम (सांसद) उपस्थित हैं।

मणिनगर—अहमदाबाद सेवा केन्द्र पर हुए डाक्टरों के कार्यक्रम में डा. गिरीश जी प्रवचन करते हुए। इनकी बायीं ओर ब्र. कु. सरला, शारदा तथा दायीं ओर डाक्टर परिषद के सचिव तथा अध्यक्ष उपस्थित हैं।

Regd. No. 10563/65-D (E)–

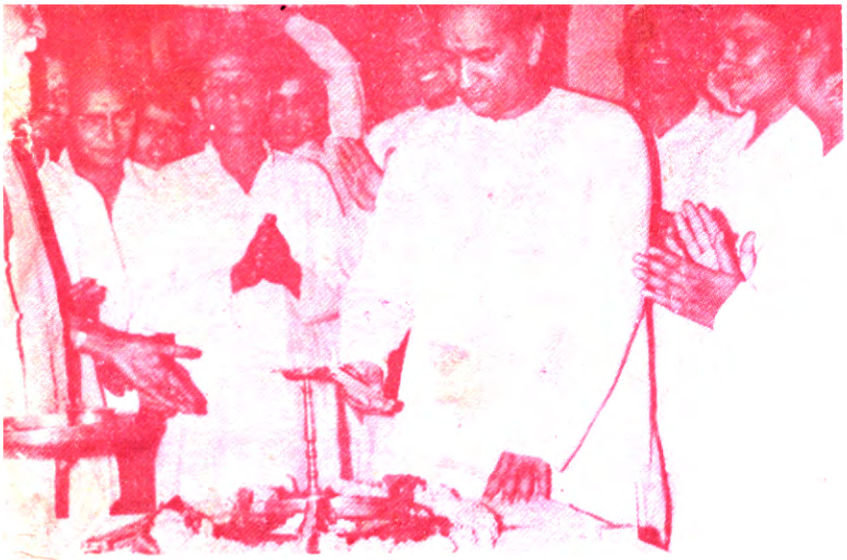

इन्दौर के समीप समृद्ध गाँव कम्पेल में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। ब्र. कु. ओमप्रकाश जी दीप प्रज्ज्वलित कर प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए।

शिवसागर में असम के मुख्य मन्त्री भ्राता सेइकिया जी को ब्र. कु. आशा श्रीकृष्ण का चित्र भेंट करते हुए, साथ में ब्र. कु. सुमन तथा अन्य ब्र. कु. भाई बहन खड़े हैं।

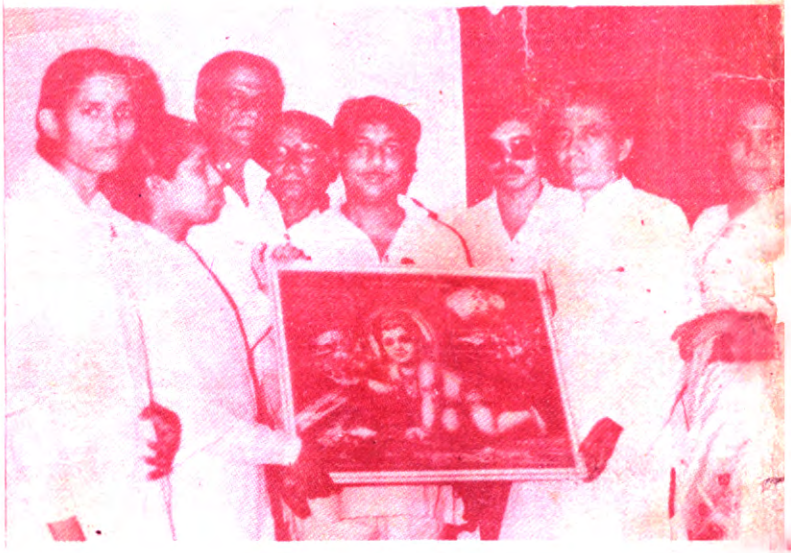

जकार्त्ता (इन्डोनेशिया) में ब्र. कु. हैलन एक रोमन कैथोलिक नन को शिव बाबा सन्देश देते हुए।

कुनीगल में हुए आध्यात्मिक मेले के उद्घाटन समारोह में मंच पर (बाएं से) ब्र. कु. बसवराज जी, स्वामी बालगंगाधर नाथ जी तथा ब्र. कु. सुन्दरी जी विराजमान हैं।

दीदी मनमोहिनी जी योग-गति को प्राप्त

दिवंगत दीदी मनमोहिनी जी

ब्रह्माकुमारी मनमोहिनी जी ने सन् १९३७ में सहज राजयोग के ईश्वरीय मार्ग को अपनाया था और आध्यात्मिक लोक-सेवार्थ अपना तन-मन-धन समर्पित किया था। तब से लेकर वे मनोबल तथा पूर्ण निष्ठा के साथ योगी जीवन की दिनचर्या का पालन करते हुए, योगाभ्यास एवं ज्ञान-सेवा, दिव्य गुण सेवा में तत्पर थीं। २८ जुलाई, १९८३ को, प्रातः ९.३० बजे उनकी योग यात्रा पूरी हुई और उन्होंने योग के अव्यक्त एवं विचित्र अनुभव करते हुए पार्थिव देह का त्याग किया तथा परमपिता परमात्मा शिव की ओर प्रस्थान किया। जैसे आकाश से कोई धरती की ओर आता है, वैसे ही उस चेतन ज्योति-तारा रूप आत्मा ने सूक्ष्म लोक की ओर प्रस्थान किया और तत्काल परमपिता शिव तथा अव्यक्त ब्रह्मा बाबा को सायुज्य, सामीप्य और सालोक्य प्राप्त किया ताकि वे नई सृष्टि की योजना में निमित्त पार्टधारी बन सकें। oo

दीदी मनमोहिनी जी का देहावसान

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका दीदी मनमोहिनी जी अपने स्वास्थ्य की जांच के लिए बम्बई गयी थीं। वहां डाक्टरों को मालूम हुआ एक रसोली (Tumour) है जोकि क्रूर (Malignant) नहीं हैं बल्कि अक्रूर (Benign) है। उनकी राय के अनुसार दीदी जी की शल्य चिकित्सा हुई। शल्य-क्रिया के लिए जाते समय भी वे योग-युक्त एवं प्रसन्न-चित्त एवं प्रफुल्लित थीं। उसके बाद उनके स्वास्थ्य में कुछ प्रगति मालूम होती थी परन्तु दो-तीन दिन के बाद स्वास्थ्य में कमी आने लगी। बीच-बीच में उन्हें बाह्य चेतना भी होती थी परन्तु अधिकतर समय वे अव्यक्त होकर सूक्ष्म लोक के सूक्ष्म, विचित्र दिव्य दृष्टि के अनुभवों में लीन थी। आखिर उन्होंने इस लौकिक देह को त्याग दिया। अपना शरीर रूपी वेश (Dress) और शरीर का देश (Address) छोड़ दिया। उनका यह समाचार देश-विदेश में रेडियो, समाचार पत्रों, तारों तथा दूरभाष द्वारा तुरन्त ही फैल गया। अतः विश्व के कोने कोने से श्रद्धांजलियाँ और सन्देश ई० वि० वि० के मुख्यालय में आने लगे।

दीदी का शरीर रूपी रथ जब अन्तिम क्रिया के लिए माउन्ट आबू में एम्बूलेंस में लाया जा रहा था तो मार्ग में बड़ौदा, सूरत, अहमदाबाद आदि में सेवा-केन्द्रों के योगाभ्यासी तथा लोग राजमार्ग पर पुष्पाञ्जलियां अर्पित करने के लिए खड़े थे। माउन्ट आबू में भी नगरवासियों ने दुकानें बन्द कर दीं तथा दीदी जी की रथ-यात्रा में वे भी सम्मिलित हुए। एक सभा में माउन्ट आबू के सरकारी अधिकारियों ने तथा देश-विदेश से पधारे ब्रह्मा-वत्सों ने भी भाव-भीगे शब्दों में अपने उद्गार व्यक्त किये। oo

←मुख्य प्रशासिका दादी जी प्रकाशमणि जी दीदी जी के शरीर रूपी रथ पर अन्तिम दृष्टि डालते हुए

दीदी मनमोहिनी जी की जीवन-यात्रा का आदि और अन्त

दीदी मनमोहिनी जी का दैहिक जन्म हैदराबाद (सिन्ध) के एक गिने-माने धनाढ्य कुल में हुआ था। अतः उन्हें धन से प्राप्त होने वाले सांसारिक सुख उपलब्ध थे किन्तु वे मानसिक रूप से असन्तुष्ट थीं। उसका एक कारण यह था कि उनकी लौकिक माता युवावस्था में ही पति के देह-त्याग के कारण बहुत अशान्त थीं। वे स्वयं अपने अनुभव से भी जानती थीं कि इस संसार में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसे सर्वांगीण एवं स्थाई सुख तथा शन्ति प्राप्त हो।

सत्संग तथा गीता एवं भगवान से प्रेम

उन्हें बाल्यावस्था से ही सत्संग में रुचि तथा गीता से विशेष प्रेम था। वे श्रीमद्भागवद् भी पढ़ा और सुना करती थीं। भागवद् में गोपियों के प्रसंग में यह पढ़कर कि वे भगवान के प्रेम में अपनी सुध-बुध खो बैठती थीं, उनके मन में यह भाव उत्पन्न होता कि मेरे लौकिक पिता ने नाम तो मेरा गोपी रखा है परन्तु, काश क्या ही अच्छा होता कि श्रीमद् भागवद् में जिन गोपियों का वर्णन है, मैं उनमें से एक होती ! श्रीमद्भगवद् गीता की जो प्रति वे पढ़ा करती थीं, उसमें गीता के "महात्म्य-वर्णन" में लिखा था कि प्राचीन काल में अमुक व्यक्ति जब गीता सुनाया करते तो उनके सुनाने के स्थान के द्वार के सामने से गुज़रता हुआ कोई भी व्यक्ति वहां रुके बिना नहीं रह सकता था। हर पथिक एक चुम्बक के आकर्षण की न्याई आध्यात्मिक आकर्षण से खिंचा हुआ वहाँ खड़ा हो जाता; वह आवश्यक काम होने पर भी उस गीता सुनने के चाव को न मीटा सकता। इस महात्म्य को पढ़कर दीदी जी के मन में विचार आता कि क्या मेरे जीवन-काल में मुझे कोई ऐसा गीता सुनाने वाला मिलेगा? उनकी ये कामनाएँ और भावनायें शुभ और शील युक्त थीं और आखिर उनके पूर्ण होने का समय आ गया।

ईश्वरीय ज्ञान एवं सहजयोग विधि की अनमोल उपलब्धि

उनकी लौकिक माता को किसी ने बताया कि दादा लेखराज प्रतिदिन अपने निवास स्थान पर ऐसी प्रभावशाली एवम् मधुर रीति से गीता सुनाते हैं कि बस, मन उसी में रम जाता है और जीवन-विधि अथवा संस्कारों में परिवर्तन के शुभ लक्षण प्रगट होने लगते हैं। दादा लेखराज वहां प्रसिद्ध जवाहरी थे और उनके व्यवहार तथा उनकी धारणाओं से वहाँ का प्रतिष्ठित वर्ग प्रभावित था। दीदी जी की लौकिक माता वहाँ ज्ञान सुनने गई। पति के देहान्त के कारण उनके मन में वैराग्य तो था ही, अब उसे ज्ञान की सुगन्धि मिली और प्रभु-स्मृति का आधार मिला तथा एक उच्च लक्ष्य के लिए पुरुषार्थ करने की राह मिली और उससे होने वाला हर्ष तथा आनन्द भी प्राप्त हुआ। अतः शीघ्र ही दीदी जी, जिनका लौकिक नाम गोपी था, भी गीता-ज्ञान की प्यास लिये और प्रभु-मिलन की आशा लिए वहाँ गई। वहाँ उन्होंने देखा कि दादा लेखराज, जिनका बाद में दिव्य नाम 'ब्रह्मा बाबा' अथवा 'प्रजापिता ब्रह्मा' प्रसिद्ध हुआ, के मुख-मण्डल से पवित्रता का तेज और रूहानियत से प्राप्त होने वाली शान्ति की कान्ति तथा दिव्यता की चाँदनी बरस रही है। उनकी वाणी में एक अद्वितीय मिठास, ओज और रस है। उसको सुनने वालों के मन को जहाँ शान्ति मिलती है, वहां उसमें एक क्रान्ति भी आती है। उसको सुनने वाले पर एक ऐसा असर पड़ता है कि जो मनोविकार पहले उसे अपनी बेड़ियों में जकड़े हुए थे, अब वह उन्हें तोड़ फेंकने के लिए केवल कृत संकल्प ही नहीं होता बल्कि ज्ञान और योग की हथोड़ी और छैनी से चूर-चूर कर देता है। दीदी जी भी उससे प्रभावित हुए बिना न रह सकी। उन्हें ऐसा लगा कि जिस सच्चे गीता-ज्ञान-दाता की उन्हें खोज थी,

अब वह उन्हें मिल गया है। अतः बाबा ने अपने प्रवचनों में, जिन्हें अलौकिक भाषा में 'मुरली' कहा जाता, पूर्ण पवित्रता का व्रत लेने के लिए जो घोषणा की, उसके उत्तर में दीदी जी ने अन्य अनेकों की तरह इस महान व्रत को सहर्ष स्वीकार किया। उन्होंने यह मन में ठान लिया कि ब्रह्मचर्य व्रत के पालन के लिये वे सारे संसार का सामना करने को, सिर पर पहाड़ ढह जाने की तरह कष्टों को और सब प्रकार की कठिनाइयों का सामना करेंगे। यहाँ तक कि यदि उनका शरीर भी चला जाए तो वे उसकी भी बलि देंगी परन्तु वे इस व्रत से नहीं टलेंगी, नहीं टलेंगी।

संघर्ष और संग्राम का सामना

उनके इस व्रत के कारण उनका कड़ा विरोध भी हुआ। उनके निकटतम सम्बन्धियों ने उस सतसंग एवं संगठन का हर प्रकार से कड़ा विरोध भी किया और दीदी जी पर कई प्रकार से बंधन लगाए गए। परन्तु यह उनकी वीरता का, उनके संकल्प की दृढ़ता का, उनके निश्चय की अचलता का और उनके पुरुषार्थ की तीव्रता का द्योतक है कि आज से लगभग ५० वर्ष पहले के ज़माने में जब हिन्दु समाज में नारी अत्यन्त अबला स्थिति में होती थी, तब भी एक ऊँचे आदर्श को सामने रखकर उन्होंने सब विरोध सहन किये परन्तु प्रभु-प्रेम से और पवित्रता के नियम से वे एक पल भी पीछे नहीं हटीं। हम भारत देश की वीरांगनाओं की वीर-गाथाएँ पढ़ते हैं और झाँसी की रानी जैसी सेनानियों के निर्भीक संग्राम के ऐतिहासिक छन्द-बद्ध उल्लेख भी पढ़ते हैं, परन्तु दीदी जी के आध्यात्मिक संग्राम की गाथा वीरता के दृष्टिकोण से किसी से भी कम नहीं है।

ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में प्रारम्भ से ही एक मुख्य सेवाधारी

सन् १९३७ में जब 'दादा' अथवा 'बाबा' ने इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की स्थापना की और उसके लिए कन्याओं-माताओं का एक ट्रस्ट बनाया और अपनी सारी चल एवं अचल सम्पत्ति उन कन्याओं-माताओं को समर्पित की, तब दीदी मनमोहिनी जी भी उस ट्रस्ट की एक विशेष सदस्या थी। तब से ही बाबा ने उन्हें कन्याओं-माताओं के विभाग से सम्बन्धित अनेक कार्यों के लिए ज़िम्मेवार ठहराया था और वे यज्ञ-माता सरस्वती जी की विशेष परामर्शक (Consultant) भी नियुक्त की गई थीं क्योंकि उनमें तदानुकूल प्रतिभा थी।

प्रशासन अभियन्ता

फिर, देश-विभाजन के बाद, सन् १९५१ में इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय को पाकिस्तान से स्थानान्तिरत करने के लिए व्यवस्था करनी थी तब बाबा ने दीदी जी को ही इस कार्य के लिए भेजा था। दीदी जी ने ही पूछताछ करते-करते इसके लिए माऊण्ट आबू नगर को चुना था।

ज्ञान मूर्ति, गुण मूर्ति, योग मूर्ति और वात्सल्य मूर्ति

उतना ही नहीं, दीदी जी में अनेकानेक गुण थे। सबसे पहली बात तो यह है कि वे एक नियमित विद्यार्थी थीं। सन् १९३७ से लेकर १९८३ की इस वेला तक शायद कभी भी उन्होंने बाबा की ज्ञान-मुरली श्रवण अथवा संगठित ज्ञान अध्ययन (Class) में अनुपस्थिति हुई होंगी। सदा ही सभी ने उन्हें नित्य प्रातः नोट बुक व पैन का क्लास में प्रयोग करते हुए देखा होगा। क्योंकि वे सुनते समय कुछ ज्ञान-बिन्दुओं को लिख डालतीं और बाद में दिन-भर में मिलने वाले ज्ञान अभिलाषियों को सुनाती रहतीं। इस प्रकार ७२ वर्ष की आयु में भी वे एक नित्य नियमित विद्यार्थी (Regular Student) थीं। जितना ही वे ज्ञानोपार्जन में तत्पर थीं, उतना ही वे योगाभ्यास में भी तीव्र वेगी थीं। वे नित्य प्रातः स्नान कर ४ बजे सामूहिक योग में न केवल उपस्थित होतीं बल्कि अधिकतर मौन अभ्यास में सबके सम्मुख योग-मूर्ति के रूप में योग सचेतक होतीं।

संस्कार परिवर्तन की सेवा में दक्ष

इसके अतिरिक्त वे एक स्नेहमयी आध्यात्मिक वरिष्ठ शिक्षिका भी थीं। दूसरों को ज्ञान-गुण और योग के मार्ग पर लाने का उनका तरीका निराला था। वे प्रेम के प्रभाव से सम्पर्क में आने वालों के जीवन में सहज परिवर्तन लाने में दक्ष थीं। कोई मिलने आता, वे ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की ओर से छपी एक डायरी—जिसमें ज्ञान और योग से सम्बन्धित कुछ चित्र भी हैं और हर पृष्ठ पर कोई महावाक

भी—उन्हें भेंट के रूप में देतीं और उन्हें डायरी का कोई भी पृष्ठ खोलने के लिए सुझाव देतीं। जब वह ले लेता, तब उसे कहतीं—"इसका कोई भी पृष्ठ खोलिए"। वह एक बच्चे की न्याई मां के जैसा दुलार पाकर हंसता-मुस्कराता डायरी का कोई पन्ना खोल देता तब वे कहतीं—"पढ़ो, इसमें क्या लिखा है।" वह उसे झूमते-झूमते प्रेम-निमग्न होकर पढ़ लेता। तब दीदी कहतीं--"यह है तुम्हारे लिए ग्रन्थ साहब का वचन। ठीक है ?" वह उत्तर देता, "जी हां, यह तो बहुत अच्छा है। यह डायरी मेरे लिए है; यह तो अच्छी डायरी है।" दीदी जी प्रत्युत्तर में कहतीं—"अच्छी लगती है न; इसे धारण करना। यह शिव बाबा की तरफ से आपके लिए सौगात है। प्रतिदिन एक पन्ना खोल लेना और उस शिक्षा को धारण करने का पुरुषार्थ करना और फिर रात्रि को इसमें अपनी अवस्था का चार्ट लिखना; फिर देखना जीवन में कितना परिवर्तन आता है। सच कहती हूँ, बहुत आनन्द आयेगा क्योंकि ये ईश्वरीय महावाक्य हैं।" इस प्रकार उनकी सौगात जीवन को लोहे से सोना बना देती और वह भी सुगन्धित। गोया वे प्रेम (Love) मर्यादा (Law) की ओर मनुष्य का जीवन मोड़ देती। वास्तव में देखा जाय तो दूसरों पर उनके कहने का प्रभाव इसलिए पड़ता था क्योंकि वे पहले स्वयं उसे अपने जीवन में लाती थीं।

दीदी जी में किसी व्यक्ति को परखने की शक्ति (Judgement of men) मार्के की थी। जैसे धन्वन्तरि व्यक्ति की नब्ज से उसके रोग को जान लेता था, वैसे ही सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति को दीदी जी चेहरे, हाव-भाव अथवा अल्प वार्ता से तुरन्त ही जानकर उसकी आध्यात्मिक समस्या का निदान कर लेती थीं और उसे ठीक हल सुझाती थीं। अपनी इस विशेषता के कारण उन्होंने सैंकड़ों, हजारों व्यक्तियों को पवित्रता एवं योग के मार्ग पर मार्ग-दर्शन दिया, आगे बढ़ाया, उनका काया पलट किया और उन्हें ऐसा प्रेरित किया कि अनेकानेक कन्याओं एवं माताओं ने अपना जीवन ईश्वरीय सेवार्थ अथवा लोक-कल्याणार्थ समर्पित कर दिया।

वे एक कुशल पत्र-लेखिका भी थीं। संक्षेप में ही पत्र एवं पत्रोत्तर द्वारा वे 'सोये-हुओं' को 'जगा' देती अथवा माया से घायल हुए मन को राहत देकर पुनरुज्जीवन (Rejuvenation) देने का महान कार्य करती।

अथक सेवाधारी

वे प्रारम्भ से ही कर्मठ थी। उन्होंने इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय में अथक होकर सेवा की ओर अपना तन, मन, धन पूर्ण रूपेण जन-जाग्रति में लगा दिया। वृद्धावस्था में भी उन्होंने ईश्वरीय सेवार्थ आसाम से आबू तक, काश्मीर से कन्याकुमारी तक और कलकत्ता से कच्छ तक देश का भ्रमण किया और, इतना ही नहीं, विदेश में भी वे इस श्रेष्ठ कर्त्तव्य के लिए गईं। अपनी इस ७२ वर्ष की आयु में भी वे मधुबन में पधारे हुए हज़ारों आगन्तुकों को सुख-सुविधा देने तथा ज्ञान की गहराई में ले जाने और मातृवत वात्सल्य से सींचने में दिन-रात लगा

दीदी मनमोहिनी जी और दादी प्रकाशमणि जी का अनुपम स्नेह

रहतीं। अभी इसी वर्ष की बात है कि वे मधुबन में आने वाले हज़ारों योगाकांक्षियों की मन, वचन, कर्म से सेवा करने में लगी रही परन्तु शारीरिक अस्वस्थता के कारण एक ग्रुप से नहीं मिल सकी। सेवा के इस तनिक से अवसर का छुटना भी उन्हें अखरता था।

मन की सच्चाई और सफाई तथा अमृतवेल याद की यात्रा पर जोर

दीदी जी प्रारम्भ से ही बाह्य स्वच्छता और मन की सफाई और सच्चाई तथा स्वांवलम्बी जीवन पर विशेष बल देती थीं। वे ईश्वरीय मार्ग पर सद्गुरू परमात्मा शिव की शिक्षाओं के प्रति फरमांबरदार और वफादार बने रहने के लिए ही हमेशा सीख देती थीं। और नित्य ब्रह्म मुहूर्त तथा अमृतवेले उठकर ईश्वरीय याद रूपी यात्रा करने की ताकीद करती थीं। इस प्रकार नियम पूर्वक दिनचर्या का पालन करने के लिए वे विशेष ध्यान दिलातीं।

अतिरिक्तमुख्य प्रशासिका का कर्तव्य कर सेवा केन्द्रों में वृद्धि

अपनी कुशाग्र बुद्धि, व्यक्तियों की परख, प्रेम, मर्यादा पालन, नियमित विद्यार्थी जीवन तथा अथक सेवा के कारण वे एक कुशल प्रशासिका भी थीं इसलिए सन् १९५१-५२ से लेकर, जब से ईश्वरीय सेवा प्रारम्भ हुई, से १९६१ तक वे कन्ट्रोलर अथवा प्रशासन-अभियन्ता एवं नियन्त्रक नियुक्त थीं और जनवरी सन् १९६९ में प्रजापिता ब्रह्मा के अव्यक्त होने के बाद इसकी मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी के साथ अतिरिक्त प्रशासिका (Additional Administrative Head) के तौर पर सेवा-रत थीं। **यह एक बहुत महत्त्वपूर्ण बात है कि १४ वर्ष तक निरन्तर उन दोनों ने इक्ट्ठे मिलकर इस विधि प्रशासन कार्य किया कि कभी उनमें मन-मटाव नहीं हुआ न उन्होंने एक-दूसरे पर आलोचना की। वे कहा भी करतीं कि हम दोनों के शरीर अलग-अलग हैं परन्तु आत्मा एक है। उनके इस**

दीदी जी के पार्थिव शरीर की अन्तिम यात्रा

मन्तव्य और घनिष्ठ स्नेह को देखकर लोग दंग रह जाते और इन दोनों के इस कुशल प्रशासन से परमपिता परमात्मा शिव के प्रशिक्षण एवं संरक्षण में ईश्वरीय विश्व-विद्यालय ने दिन दुगनी और रात चौगुनी तरक्की की जिसके फलस्वरूप इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के विश्व-भर में लगभग ११५० केन्द्र तथा उपकेन्द्र हैं।

दीदी जी अभी कुछ वर्षों से ईश्वरीय याद रूपी यात्रा की रफ्तार तेज़ करने के लिए कहती थीं और अपने हर प्रवचन में यह जरूर जताती थीं कि अब 'घर' (परमधाम) वापिस चलना है। इसलिए वे पुरानी बातों को भूल कर हल्का होने, दूसरों के अवगुण न देख गुण देखने और नित्य निरन्तर 'श्रीमत' (ईश्वरीय शिक्षाओं एवं मर्यादाओं) के अनुसार चलने की बात जरूर कहती थीं।

उनके देह-त्याग से कुछ समय पहले इसी वर्ष जब वे थोड़ी अस्वस्थ थीं तो शिव बाबा ने कहा था कि वे पलंग पर नहीं बल्कि प्लैनिंग (Planning) में हैं और भोगना में नहीं बल्कि योजना में हैं। शिव बाबा इससे अधिक और स्पष्ट बता ही कैसे सकते थे? अब इसको स्पष्ट करते हुए शिव बाबा ने बताया है कि अब जो सतयुगी, पवित्र योग बल वाली सृष्टि की नींव पड़ेगी, उनमें वे प्राथमिक पार्ट अदा करेंगीं। अतः यद्यपि इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के हरेक विद्यार्थी किंवा बहन और भाई को उससे अमिट स्नेह रहा है और है तथापि दीदी जी के अनुपम आध्यात्मिक उत्कर्ष को देखकर और उनके सराहनीय, उज्जवल भविष्य को जानकर वे इस वृत्तान्त को शोक का अवसर नहीं मानते बल्कि योग का अवसर मानते हैं। और इससे अपने पुरुषार्थ को और तीव्र करने की प्रेरणा लेते हैं। □

जीवन-झलकियाँ

दीदी मनमोहिनी जी के जीवन में अनेक दिव्य गुण अपने उत्कर्ष पर थे। वे बहत्तर वर्ष की आयु में भी आश्चर्य-चकित कर देने वाली स्फूर्ति और चेतना के साथ काम करती थीं। मधुबन में देश के कोने-कोने से तथा विदेशों से हज़ारों व्यक्ति आते थे तो उनका कार्य-उत्तरादायित्व इतना बढ़ जाता था कि एक अच्छे युवक या युवती के लिये भी संभालना कठिन था परन्तु उन्होंने एक तो सारी व्यवस्था को दादी जी के साथ मिल कर ऐसा बना रखा था कि कार्य सुचारू रूप से, झंझट और झड़प के बिना चलता रहता था और दूसरे वे स्वयं कार्य-प्रवाह से परिचित एवं सूचित रहती थीं तथा ध्यान देती थीं। प्रातः ही वे सारे मधुबन का एक बार भ्रमण कर लेती थीं और भण्डारे आदि-आदि में, जहाँ-कहीं भी उनके परामर्श की आवश्यकता हो, वे राय दे आती थीं। उनका कार्य लेने की विधि भी ऐसी थी कि सभी उन से सन्तुष्ट रहते थे। वे उनकी कठिनाइयों को भांप कर उन्हें वांच्छित हल देती थीं और उनमें कठिनाइयों को पार करने के लिये प्रेरणा भी देती थीं। यही कारण है कि मधुबन में जो भी वरिष्ट सरकारी अधिकारी आते या बड़े उद्योगों के व्यवस्थापक आते, वे दीदी जी तथा दादी जी, दोनों से मिलते समय यह अवश्य कहते कि यहाँ की व्यवस्था देख कर उन्हें बहुत अच्छा लगा है। न कोई कोलाहल, न आहट, न तनाव न कार्य का ठहराव। शान्ति, परस्पर प्रेम तथा सेवा-भाव से सुचारू कार्य देखकर सभी कहते कि प्रशासन (Administration) सीखनी हो तो इनसे सीखनी चाहिये। अभी फ़रवरी, १९८३ में मधुबन में जो सम्मेलन हुआ तब दादी प्रकाशमणि जी और दीदी मनमोहिनी जी के संरक्षण में तीन हज़ार व्यक्तियों के ठहरने, भोजन करने तथा सब प्रकार की सहूलियतें मिलने और साथ-साथ सम्मेलन तथा योगादि का कार्य ऐसा शान्तिपूर्वक चला कि अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के लोगों ने भी इसकी प्रशंसा की। इसी प्रकार, इतने बड़े शान्ति भवन के इतने अल्प काल में निर्माण होने की बात भी सभी के लिये एक मधुर आश्चर्य बन गया। वास्तव में यह इन दोनों के मधुर व्यक्तित्व एवं प्रशासन-कुशलता का प्रभाव था कि सभी ने तन-मन-धन से सहयोग दे कर इतने बड़े कार्य को सहज ही सफलता से कर लिया और वह भी योगयुक्त एवं शान्ति से।

त्यागमय जीवन

दीदी जी यद्यपि एक बहुत ही धनवान घराने में पैदा हुई थीं तथापि उनकी वेश-भूषा, खान-पान तथा रहन-सहन अन्य सभी की तरह अत्यन्त सादा और साधारण था। उन्होंने कभी भी अपने लौकिक कुल के धन-धान्य के बारे में गर्व नहीं किया। उन्होंने अपने लौकिक जीवन के सुखों को कभी भी याद नहीं किया। इस प्रकार वे सादगी और त्याग की मूर्ति थीं। उनके पास जो चीजे होतीं, वे दूसरों को ही सौगात देकर उन्हें प्रभु-प्रेम में बान्धतीं। उन वस्तुओं को वे अपने लिये प्रयोग नहीं करतीं।

नम्रचित

दीदी मनमोहिनी जी दादी प्रकाशमणि जी के साथ मिलकर एक बहुत बड़ी, अन्तर्राष्ट्रीय संस्था की कार्य-संचालिका थीं। अतः उत्तरदायित्व के साथ उन्हें काफ़ी अधिकार भी प्राप्त थे। परन्तु उन्होंने कभी किसी से अधिकार या सत्ता के मद से नहीं बोला। बल्कि यदि कभी किसी ने मर्यादानुसार व्यवहार नहीं किया तब भी उन्होंने उसे मातृवत प्रेम ही दिया ताकि वह ईश्वरीय ज्ञान के मार्ग से पीछे न हट जाय। यदि कभी कोई किसी कारण से रुष्ट भी हो गया तो भी उन्होंने स्वयं झुककर उसे स्नेह और सौहार्द्र से खींचा ताकि शिव बाबा के साथ उस आत्मा का बुद्धियोग बना रहे और वह देह-धारी आत्माओं से रूठकर कहीं योग-मार्ग से विचलित न हो जाय। उन्होंने कभी यह हठ नहीं किया कि "गलती अमुक व्यक्ति की ही है, अथवा दोष उसी का ही है और इस लिये मैं उससे क्यों बात करूँ?" बल्कि स्वयं दीदी जी ने ही उसके मन को शीतल करने के लिये कहा कि "भाई, मन में कोई बात हो तो निकाल दो; हम सभी एक मार्ग के राही हैं, दैवी परिवार में आत्मिक सम्बन्धी हैं और हमारे मन में आपके लिये शुभ भाव ही हैं।" इस प्रसंग में यह कहना उचित होगा कि दीदी जी को बच्चों का यह गीत: "**हम हैं आत्मा, तुम हो आत्मा आपस में भाई-भाई, बाबा कहते पढ़ो-पढ़ाई; नहीं किसी से लड़ो लड़ाई,**" अच्छा लगता था।

निद्राजीत

जो लोग भी दीदी जी के सम्पर्क में आये हैं, वे जानते हैं कि दीदी जी सोती बहुत कम थीं, वे रात्रि को निद्रा त्याग कर भी कुछ समय व्यक्तिगत रूप से योगाभ्यास करती थीं। यद्यपि वृद्धावस्था के कारण अभी पिछले कुछ वर्षों में कभी-कभी कुछ मिनटों के लिये उनकी आँख लग जाती थी, तथापि वे प्रातः कभी २ बजे भी उठ जातीं, अव्यक्त बाप-दादा के प्रोग्राम में काफ़ी समय बैठी रहतीं और वैसे भी "ईश्वरीय याद रूपी यात्रा" पर विशेष ध्यान देतीं। उस सभी का ही यह फल है कि वे ज्ञान एवं योग की दौड़ में विन (Win विजय)और वन (One: प्रथम) की सूची में आ गयीं।

विनोद प्रिय

दीदी जी केवल तपस्यामूर्त्त ही नहीं, बल्कि विनोद-प्रिय भी थीं। वे चुटकले सुनती और सुनाती थीं परन्तु वे चुटकले भी शालीन और अलौकिकता की ओर ले जाने वाले होते थे। वे शुष्क स्वभाव की न थीं बलिक इतनी आयु होने पर भी बाल-स्वभाव की तरह सरल और हास्य-प्रिय थीं।

स्नेहमय व्यक्तित्व

दीदी जी की यह एक विशेषता थी कि वे सम्पर्क में आये व्यक्ति को स्नेह से अपना बना लेती थीं। वे किसी को माँ-जैसा प्यार देकर या किसी को उसकी समस्या का हल देकर स्नेह के सूत्र में बान्ध कर, उससे कोई-न-कोई बुराई छुड़वा देतीं। जो बात वह व्यक्ति अन्य किसी से न मानता था, दीदी जी उसे सहज ही मनवा देतीं। इस प्रकार उनके व्यक्तित्व में एक चुम्बकीय आकर्षण था। उनसे बात करने में किसी को भय महसूस नहीं होता था बल्कि वे उनके स्नेह के स्पन्दनों से उनकी ओर खिच जाता था और दीदी जी उसे आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ा देती थीं। उनके सम्पर्क में आते रहने वाला व्यक्ति प्रायः ज्ञान-विमुख न होता था। जिस डाक्टर ने दीदी जी का अप्रेशन किया स्वयं वह दीदी जी को माँ मानने लगा था।

परन्तु यद्यपि दीदी जी का स्नेहशील व्यक्तित्व था, वे अपनी स्थिति को उपराम भी उतना ही बनाये रखती थीं। जब वे किसी को कुछ टोली (प्रसाद) खाने के लिये देती थीं तो पूछती थीं कि "शिव बाबा की याद में रह कर खाया है या नहीं?"

आत्म-निश्चय का अभ्यास

इस प्रकार वे सभी को आत्मिक स्थिति और ईश्वरीय स्मृति के अभ्यास की टेव डालती थीं। यदि कोई व्यक्ति बीमार होता और लोग उससे बीमारी की बार-बार अधिक चर्चा करते तो वे उन्हें कहतीं कि इसे देह की अधिक याद न दिलाओ। वे उस व्यक्ति को भी कहतीं कि "शिव बाबा की स्मृति में रहोगे तो तन के कष्ट मिट जायेंगे"। स्वयं भी जब वे हस्पताल में थीं तो ईश्वरीय स्मृति में ही थीं और डाक्टर को कहती थीं कि तनको कुछ होगा, परन्तु मन ठीक है। हस्पताल में नर्सों को उनसे विशेष स्नेह हो गया था। दीदी जी ने उन्हें भी शिव बाबा का संक्षिप्त परिचय दिया था। जो कोई भी आता था, दीदी जी उसे "ओ३म् शान्ति ! शिवबाबा याद है ?" —यह कहा करती थीं। इस प्रकार हस्पताल के कर्मचारी कहते थे कि अब यह हस्पताल भी सत्संग भवन अथवा आश्रम बन गया है। दीदी जी अपने कर्त्तृत्व से वातावरण को आध्यात्मिक बना देती थी। उनकी योगदृष्टि बहुत बलशाली और शिक्षा प्रभावशाली थी।

महत्त्वपूर्ण वृत्तान्तों से भरा जीवन

दीदी जी का बहत्तर वर्ष का जीवन महत्त्वपूर्ण वृत्तान्तों से भरा हुआ रहा। उन्होंने अपने श्वासों को सफल किया। संसार की भलाई के लिये अपना सब-कुछ लगा दिया। उन्होंने दादी जी के साथ मिलकर शिव बाबा और अव्यक्त ब्रह्मा बाबा के निर्देशानुसार एक नव-क्रान्ति के बीजों को सींचा। पवित्रता सुख-शान्ति वाली नई सृष्टि के लिये महत्त्वपूर्ण पार्ट अदा किया। आगे चल कर जन-जन को उनके कृत्यों के अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय महत्व का बोध होता जायेगा।

दिया था प्यार मेरी मां बनकर

तू मेरे तपते हुए जीवन-पथ पर
बरसी थी योग का बादल बनकर।

हर मोड़ पर कर के नेतृत्व
पिलाया ज्ञान का प्याला भरकर।

मेरी आत्मा को दिया था वह सन्देश
दिया था प्यार मेरी माँ बनकर।

पास शिव बाबा के अब जा पहुंची
याद मेरी और पेगाँ लेकर।

तू तो आगे बढ़ी मंजिलें तय करती हुई
अब हम भी होंगे तैयार पाबन्दे सफ़र।

तू यह कहा करती थी 'अब घर चलना है'
फरिश्ता बनना है, श्रीमत पर चल कर।

कब चलना है यह तो बताया होता
साथ थे जब हम यह तो सुनाया होता।

अच्छा इक बात बताओ दीदी
तू जो 'टोली' देती मुट्ठी भर कर।

वह अब भेजोगी या भिजवाओगी
दीदी तुम दे दो न खुद आ कर।

अमृत-सूची

क्र० सं०	विषय	पृष्ठ	क्र० सं०	विषय	पृष्ठ
१.	रक्षा बन्धन का 'बन्धन' निभाने से ही वास्तविक स्वतन्त्रता की प्राप्ति।	१	८.	ईश्वरानुभूति	१३
२.	युवा वर्ग—एक पुराने समाज के परिवर्तक और एक नए समाज के प्रेणता (सम्पादकीय)	२	९.	बुद्धि की तुला पर राजयोग की अवधारणाएं	१६
३.	शिव भगवानुवाच	४	१०.	राखी की शुभ बधाई ... (कविता)	१८
४.	अनुपम राखी (कविता)	५	११.	मृग तृष्णा	१९
५.	युवा शक्ति ही लाएगी विश्व में शान्ति	६	१२.	रक्षा का बन्धन—पवित्रता (नाटक)	२१
६.	सचित्र समाचार—	८	१३.	सच्ची स्वतन्त्रता	२५
७.	समर्पित जीवन - त्याग और तपस्या का	९	१४.	श्री कृष्ण १६ कला महान और सुन्दर थे	२६
			१५.	आध्यात्मिक सेवा समाचार ...	२९

रक्षा-बन्धन का 'बन्धन' निभाने से ही वास्तविक स्वतन्त्रता की प्राप्ति

रक्षा बन्धन बहनों और भाइयों के पारस्परिक स्नेह और सम्बन्ध के रूप में ही मनाया जाता है। इस दिन बहनें भाइयों को राखी बाँधती हैं और मिठाइयों से भाइयों का मुख मीठा करती हैं और भाई भी मन-ही-मन वचन देते हैं कि वे भोई का नाता ठीक निभाएँगे।

इस त्यौहार के पीछे रहस्य तो यह है कि सृष्टि की आदि (अर्थात् स्थापना काल) में परमपिता परमात्मा शिव और प्रजापिता ब्रह्मा के निर्देश से सच्चे ब्राह्मणों ने तथा शिव-शक्ति रूपा बहनों ने मनुष्यों को यह बन्धन बाँधा था कि वे पवित्र बनें अर्थात् काम, क्रोधादि पर विजय प्राप्त करें। अतः यदि इस वास्तविक रहस्य को जानकर इस पर्व को मनाया जाय तो इस पर्व से बहुत भारी प्राप्ति हो सकती है।

सतयुग और त्रेता में तो सभी मनुष्यात्माएं पूर्ण पवित्र (निर्विकारी) थीं, इसलिए उन्हें स्वर्ग का सुख और स्वराज्य प्राप्त था और श्रेष्ठाचार के कारण वे 'देवी-देवता' कहलाती थीं। सम्पूर्ण स्वतंत्र थीं। द्वापर युग से लेकर वही देवी-देवता वाम-मार्ग में चले गए अर्थात् विकारों के वश हो गए और इन काम-क्रोधादि विकारों से हारकर उन्होंने अपना राज्य-भाग्य गँवा दिया। अब संगम समय फिर से परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के मुख द्वारा सहज ज्ञान और राजयोग की शिक्षा देकर पतितों को पावन अथवा शूद्रों से सच्चे ब्राह्मण बना रहे हैं। अतः जो मनुष्यात्माएँ पवित्रता का बन्धन बाँधेंगी वे पुनः देवपद प्राप्त करेंगी अर्थात् अपना खोया हुआ स्वराज्य (राज्य-भाग्य) प्राप्त करेंगी।

★

युवा वर्ग—एक पुराने समाज के परिवर्तक और एक नये समाज के प्रणेता

मनुष्य के हर आयु-भाग की अपनी-अपनी विशेषता है। बचपन मासूमियत के लिये, किशोरावस्था शरीर के तीव्रतर विकास, स्वर्णिम स्वप्नों, ऊंचे आदर्शों तथा उभरती उमंगों के लिये और युवावस्था छलकती हुई शक्ति, कठिनाइयों से जूझने की क्षमता, विघ्नों पर विजय पाने की प्रबल मनोवत्ति तथा साहस के साथ-साथ नये-नये आयाम लेने की रुचि के लिये प्रसिद्ध है। युवावस्था एक ऐसा जीवन-भाग है जब मनुष्य की उमंग और तरंग ज्वारभाटे की स्थिति में होती है। तब उसके साहसिक मन को अपने अच्छे या बुरे स्वप्न साकार करने के लिए शरीर का भी सबल सहयोग प्राप्त होता है। यह एक ऐसी अवधि है जब मनुष्य में नई-नई ईजाद या शोध करने तथा नयी-नयी रचनाएँ करने की योग्यताएँ अपने उत्कर्ष पर होती हैं और मनुष्य स्मति तथा सीखने की सामर्थ्य के कारण नई-नई भाषाएँ तथा नये-नये कला-कौशल भी सीख सकता है। अतः संसार में सभी विद्याओं, विज्ञानों, दर्शनों, कलाओं तथा पुरुषार्थों में जो नये-नये सिद्धान्त गढ़े गये हैं या खोज की गयी है, या उपलब्धियां हुई हैं, प्रायः इस आयु भाग में, जो कि प्रायः चालीस या पैंतालीस वर्ष तक माना जाता है, में ही हुई हैं। युवावस्था की मूल विशेषता यह है कि मनुष्य इस आयु में साहसिक कार्य करने में प्रवृत्ति रखता है और उसमें साहस के साथ दिनोंदिन उत्तरदायित्व और अनुभव भी जुड़ता जाता है।

इस प्रकार युवावस्था अकथनीय महत्त्व का समय है। इस काल में मनुष्य अपनी ईजादों, खोजों, साहित्यिक रचनाओं, कला-कौशल की नई-नई उपलब्धियों, साहसिक कार्यों, नई विचारधाराओं आदि के द्वारा समाज को विशेष देन से लाभान्वित कर सकता है और उस पर स्थायी प्रभाव डाल सकता है। वह रचनात्मिक कार्यों द्वारा संसार के सुख-साधनों में अभिवृद्धि कर सकता है।

यदि इस दष्टि से देखा जाय तो जैसे रीढ़ की हड्डी शरीर के ढाँचे को स्थिर करने में सहायक है वैसे ही युवा वर्ग समाज के ढाँचे को सम्भालने में सहायक है। किसी भी संस्था, समाज या देश में उमंग-उत्साह और सजीवता तथा सक्रियता का आधार वहाँ के युवक और युवतियाँ ही होते हैं। वे भयावह परिस्थितियों में भी हौसले और वीरता से काम करते हैं। यदि किसी देश की युवा पीढ़ी ही आलसी, विलासी, अनुशासनहीनता या दास-भावना वाली हो जाती है तो मानना चाहिये कि उस देश या जाति के बुरे दिन आ रहे हैं जबकि उसके युवक देश की सांस्कृतिक धरोहर और आर्थिक सम्पति को ही ध्वस्त कर देंगे। और, इसके विपरीत यदि किसी देश की युवा पीढ़ी चरित्रवान, उद्यमी और अनुशासन-बद्ध होती है तो वह देश उन्नति करता है। अतः देश की सारी स्थिति इस बात पर निर्भर करती है कि उस देश के युवक अपनी शक्ति का कैसा प्रयोग करते हैं।

परन्तु यदि हम सर्वेक्षण करें तो हमें मालूम होता है कि इस आयु में जो विशेषताएँ और योग्यताएँ होती हैं, उनका श्रेष्ठ प्रयोग नहीं किया जाता रहा बल्कि अल्प-स्थायी प्राप्ति को सामने रख कर ही उनका प्रयोग होता रहा है।

हम देखते हैं कि पिछले ढाई हज़ार वर्षों के ऐतिहासिक काल में करोड़ों स्वस्थ और सुदृढ़ शरीर वाले युवकों को लड़ाई लड़ने के लिये भरती किया जाता रहा है। निस्सन्देह, बाह्य आक्रमणकारियों से देश की सैनिक-सुरक्षा और भीतरी उपद्रवियों तथा अपराधियों से जन-धन के बचाव की पुलिस-कार्यवाही, दोनों ही आवश्यक कार्य हैं और इनमें भरती होने वालों को देश-प्रेम, बलिदान तथा वीरता प्रदर्शन के लिये अवसर मिलता है, परन्तु प्रश्न किया

जा सकता है कि—"यदि इन युवकों की शक्ति का ऐसी योजनाओं में प्रयोग किया जाता कि ऐसे सामाजिक, आर्थिक और नैतिक वातावरण का निर्माण होता कि जिससे युद्धों का बहिष्कार हो जाता और राष्ट्रों में पारस्परिक वैमनस्य समाप्त हो जाते तथा एक देश को दूसरे पड़ौसी देश से भय न रहता तो कितना अच्छा होता ?

समाज-सेवा भावना का नये समाज के निर्माणार्थ प्रयोग

हम देखते हैं कि कालेज के विद्यार्थियों को आदेश-निर्देश प्राप्त होते हैं कि वे गाँवों में जाकर पथ और पगडंडियों का निर्माण करें तथा वहाँ के युवा वर्ग को संगठित करके उपनदियों और नाले बनाने में सहयोग देकर समाज-सेवा का कार्य करें। ऐसे-ऐसे कार्यों से निस्सन्देह युवकों में सामाजिक चेतना आती है और सहानुभूति, सेवा-भाव तथा सहयोग की भावना बढ़ती है, परन्तु यदि वे उस पथ के साथ अपने जीवन के लिये पवित्रता तथा नैतिकता का पथ भी निर्मित करें और नदी से खेतों को हरा-भरा करने के जल-मार्ग बनाने के साथ-साथ आत्मा का भी परमात्मा के साथ बल आने का रास्ता जोड़ कर आत्मा की भी समुन्नति करने का उपाय करें तो कितना अच्छा होगा ! समाज में भावात्मक एकता तथा प्रेम का नाता जोड़ने से वे सामाजिक परिवर्तन (Social Change) और आर्थिक एवं आध्यात्मिक नव-निर्माण के महति कार्य के ज्वलन्त निमित्त बन सकेंगे।

बलिदान-भावना द्वारा समाज-सुधार

आज एक रिवाज-सा हो गया है कि युवकों को कहा जाता है कि रक्त-दान के लिये शिविर आयोजित करें और स्वयं भी रक्त-दान दें। ऐसे कार्यों से दूसरों के स्वास्थ्य और जीवन को बचाने के लिये युवकों में एक भावना जागत होती है। परन्तु यदि उनमें ऐसी भावना जागृत हो जाय कि जिससे वे अच्छें नियमों, सिद्धान्तों और नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिये अपना रक्त तक भी देने के लिये तैयार हो जायें और गरीबों के रक्त का शोषण करने वाले लालची लोगों से असहयोग का व्रत ले लें तो समाज का कितना भला होगा !

नयी स्वतन्त्रता के लिए उद्यम

अनेक देशों के युवक अपने-अपने देश को विदेश साम्राज्यवादी शासकों से स्वतन्त्रता दिलाने के संघर्ष में बर्छी-भाले या तोप-बन्दूक से निडर होकर, स्वतन्त्रता के झण्डे को अपने मज़बूत हाथों में थामे आगे-आगे की पंक्तियों में चलते रहें हैं। लाखों-करोड़ों युवकों ने अपने-अपने मातृ देश को मुक्त कराने के लिये न जाने कितने असह्य अत्याचार सहे होंगे और कितनों ने जेल की काली कोठरियों में यातना सही होगी, या कानून के डंडे की चोट खायी होगी, या आर्थिक कष्ट झेले होंगे ! परन्तु देश-माता की स्वतन्त्रता के लिये वे किसी भी कष्ट को बड़ा कष्ट नहीं मानते थे और स्वतन्त्रता के संग्राम में उन्होंने कायरता नहीं दिखाई। परन्तु हमें मालूम होना चाहिये कि दास-वृत्ति अथवा गुलामाना ज़हनियत, आलस्य, नैतिक असमर्थता, सामाजिक फूट और व्यावहारिक अभद्रता राजनीतिक गुलामी से भी अधिक घातक तथा हानिकारक हैं। इन्हीं के कारण ही तो देश गुलाम होते हैं, दूसरों के आगे हाथ पसारते हैं और वासना तथा विलासता की गुलामी का घृणित जीवन जीते हैं। लोभ की गुलामी से ही तो आर्थिक अपराध होते हैं और क्रोध का साम्राज्य ही तो घिनौने पापों का जन्मदाता है। अतः इनकी दासता से देश को अथवा धरती को मुक्त करने की सेवा में यदि युवकों की शक्तियों को जुटाया जाय तो कितना कल्याण होगा !

आध्यात्मिक खोज

पुनश्च, यदि देखा जाय तो साहसिक कार्य करने में ही युवकों की विशेष रुचि होती है। युवक वहाँ जा पहुंचते हैं जिन बीहड़ घाटियों में या घने जंगलों में, रेत से अटे मरुस्थल में या बर्फीली चोंटियों पर पहले किसी के पाँव न पहुंचे हों। वे नये मार्ग खोज निकालते हैं और कई पर्वतीय चोटियों पर जा पहुंचते हैं। परन्तु यदि युवक अपने भीतर की अज्ञान घाटियों को खोज डालें, यदि वे निज आत्मन के अज्ञात क्षेत्रों में जा पहुंचें, यदि वे स्वयं की तलाश में

सफल हों तो यह अरबों रुपयों की उपलब्धि से भी अधिक मूल्यवान् खोज होगी।

माँ के लालों को नई चुनौती

युवा वर्ग के बारे में एक विशेष बात यह भी है कि युवक नई-नई एवं कठिन चुनौतियों को भी स्वीकार करके विजयी होने का बीड़ा उठाते हैं। वे अपने वचन या व्रत को पूरा करने के लिये कठिनाइयों की परवाह नहीं करते, न मुसीबतों का सामना करने और जिम्मेवारियों का बोझ उठाने से घबराते हैं। विशेषकर जहाँ अपने मातृ देश के मान का प्रश्न उपस्थित हो वहाँ तो वे अपने खून का आखिरी कतरा बहाने से भी पीछे नहीं हटते। जिस माँ ने जन्म दिया, पालन किया, पढ़ाया और पोषण किया तथा इस सबके लिये कष्ट झेले, इसके लिए तो वे जीवन भी न्यौछावर करना कर्त्तव्य मानते हैं। माँ के सन्मान की रक्षा के लिये उनके सीने गोलियों और बर्छियों के आगे खुले हैं। परन्तु युवकों को यह मालूम होना चाहिये कि अब भारत माँ या धरती माता की पुकार क्या है। उन्हें यह ज्ञात होना चाहिये कि अब यह माँ विकारों की जंजीरों में जकड़ी अपने लालों को पुकार रही है। अतः अब युवकों तथा युवतियों को इस कठिनतम चुनौती को स्वीकार करने में आगे आना चाहिये क्योंकि इस स्वतन्त्रता से सम्पूर्ण सुख-शान्ति के दिन आ जायेंगे। यह कार्य कठिन और यह चुनौती विकट तो है परन्तु इसमें सर्व-समर्थ परमात्मा का आशीर्वाद और साथ है और इस परिवर्तन के लिये युवकों को और युवतियों को केवल निमित्त बनना है।

सृष्टि के प्रति क्रीड़ा-स्थल का दृष्टिकोण

युवा वर्ग खेलों के तो शौकीन होते ही हैं। परन्तु शिव बाबा कहते हैं कि इस पृथ्वी को वृहद क्रीड़ा-स्थल मानकर खेल-भाव से इसे खेलो। खेल के नियमों को न तोड़ते हुए और दण्ड (Penality) के भागी न बनते हुए, हर परिस्थिति में इसे क्रीड़ा मानकर हर्षपूर्वक रहो।

फिर, युवा वर्ग राजनीति में भी तो भाग लेने की रुचि रखते हैं। परन्तु उन्हें मालूम होना चाहिये कि राजनीति अपने सही रूप में शासन-कला और प्रजा-रंजन की कला है तथा वैधानिक स्थिति और शान्ति (Law & Order) बनाये रखने की योग्यता का नाम है। परन्तु जिस व्यक्ति ने पहले स्वयं पर ही शासन नहीं किया है, कर्मेन्द्रियों पर ही राज्य स्थापन नहीं किया है तथा जन-सेवा द्वारा प्रजा-रंजन नहीं किया है, उन्हें राजनीति में प्रवेश करने का साहस ही किस आधार पर होता है? उन्हें पहले तो आत्मानुशासन तथा शान्ति प्राप्त करने के कार्य में सफल होने का पुरुषार्थ करना चाहिये।

युवा वर्ग नये फैशन, नई चीजों के शौकीन होते हैं; अतः उन्हें इन नये लक्ष्यों, नई चुनौतियों को नये फैशन से सम्पन्न करना चाहिये।

आज संसार में ऊर्जा-संकट (Energy Shortage) की चर्चा होती है परन्तु युवा-शक्ति की कमी संसार में नहीं है। यदि इस शक्ति को जो कि सभी शक्तियों का संचालन करने वाली है, एक नये धर्म-परायण, पवित्र, शान्त एवं भ्रात-भावना से भरपूर समाज की रचना के कार्य में लगा दिया जाये तो सर्व का भला होगा।

—जगदीश

"शिव भगवानुवाच"

१. मीठे बच्चे, मन को मारो नहीं बल्कि सुधारो, मन में व्यर्थ संकल्प न आयें यह भी मन का मौन है।

२. लाडले बच्चे—जैसे मुख द्वारा तमोगुणी अशुद्ध भोजन नहीं खा सकते हो ऐसे बुद्धि का भी भोजन शुद्ध संकल्प है, बुद्धि द्वारा भी अशुद्ध भोजन अर्थात् व्यर्थ संकल्प वा विकल्प नहीं कर सकते हो।

३. मीठे बच्चे, किसका दुख लेकर सुख देना यह सबसे बड़े से बड़ा पुण्य है। ऐसा पुण्य करते करते पुण्यात्मा बन जायेंगे।

"अनुपम राखी"

(ब्र० कु० राज कुमारी, मजलिस पार्क, देहली)

बाँह बढ़ाओ भैया,
बहन राखी ले कर आई है।
दृढ़ प्रतिज्ञ हो जाओ भैया,
अनुपम कंगन लाई है॥

पहले प्रतिज्ञा करो पवित्रता की—
तब राखी करना स्वीकार।
आत्म दृष्टि रहे सदा ही
वही इस राखी का हकदार
इस हक में 'गुड-लक' समाई है।
बहन राखी लेकर आई है॥

यह तन मन्दिर, तुम आत्मा मूरत
भोग शुद्ध इसे लगाना है
भले सुन्दर कितनी भी हो सूरत
सीरत की तरफ ही जाना है
इसी में उन्नति यथार्थ समाई है।
बहन राखी लेकर आई है॥

पाँच विकारों के दुश्मन
वश में इनके हुआ मन
इनकी सफाई करनी है
नित ज्ञान पढ़ाई पढ़नी है
इस विद्या में आत्मा की शान समाई है।
बहन राखी लेकर आई है॥

राखी के धागे दे रहे संदेश
बन विदेही चल घर ऊपर तेरा देश
हर्षित रहना हर हालत में
मुरझाने का कोई काम नहीं
अन्तर्मुखीरुहानी ख्यालात में
अन्तर्दुखी का नाम नहीं
सुख कारन जग तारन शिव ने
यह राखी—
खुद बैठ बनाई है।
बहन राखी लेकर आई है॥

इस राखी की मर्यादाओं को मान
छिपी इसमें जीवन की शान
साधारण नहीं इसे समझना
धागे नहीं, है शुभ संरचना
बेहद का वर्सा लाई है।
बहन राखी लेकर आई है॥

सिद्धपुर में हुए आध्यात्मिक कार्यक्रम में लायन्ज क्लब के सदस्य ध्यानपूर्वक सुनते हुए।

कन्नौज में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता राजेन्द्र प्रसाद, लायन्स अध्यक्ष द्वारा किया जा रहा है।

युवा-शक्ति ही लाएगी विश्व में शान्ति

ब्र. कु. आत्मप्रकाश, आबू

युवा वर्ग राजयोगाभ्यास से आध्यात्मिक क्रान्ति की लहर फैला सकता है। परस्पर आत्मीयता जागृत करके वैरभाव खत्म कर सकता है। एक परमपिता के हम सब बच्चे हैं इस भावना से धर्मभेद जातिभेद, भाषाभेद को जड़ से नष्ट कर सकते हैं। बापू गान्धीजी का जो स्वप्न था "भारत देश में रामराज्य आए" उसको साकार में ला सकते हैं। स्वयं को शान्त स्वरूप आत्मा समझ शान्ति के सागर पिता शिव से बुद्धियोग जुड़ाकर सारे विश्व में शान्ति की किरणें फैलाकर दुःखी और अशान्ति से तड़पती हुई आत्माओं की प्यास बुझा सकते हैं। परन्तु आज युवा वर्ग में असन्तोष और उनमें तोड़-फोड़ की प्रवृत्ति की एक बहुत बड़ी समस्या है। सरकार और समाज, विश्व-विद्यालय और वाइस-चांसलर, पुलिस और पब्लिक, सुधारक और समाज-सेवी इस समस्या से चिन्तित भी हैं और इस का सामना करने में कुछ असमर्थ भी हैं।

युवा पीढ़ी के ये विध्वंसक कार्य शायद स्वयं युवक को भी पसन्द नहीं। परन्तु, फिर भी वह इन कार्यों में कूद पड़ता है। इसका एक मुख्य कारण यह भी है कि उभरती जवानी के जोश में उसकी सूझ और शक्ति को रचनात्मक कार्यों में लगाने की कोई अनुकूल व्यवस्था ही नहीं होती। अतः वह अन्यमनस्क-सा हुआ-हुआ तोड़-फोड़ के कामों द्वारा अपना रोश प्रकट करना चाहता है।

यह स्थिति वैसे ही स्वाभाविक है जैसे कि एक नदी में बाढ़ आने पर उसके वेगपूर्ण पानी का उसकी मर्यादा से बाहर आ जाना और गांव तथा नगरों को बहाकर नष्ट कर देना। जो राष्ट्र जल-प्लावन के प्रकोप से स्वयं को बचाना चाहते हैं, वे उसके फालतू पानी को बांध कर उसका मार्गान्तीकरण करते हैं जिससे कि न केवल उनके खेत हरे-भरे हो जाते हैं बल्कि बिजली के पैदा होने से उनके कलकारखाने भी देश के उत्पादन को बढ़ाते हैं। ठीक इसी प्रकार, यदि युवा वर्ग की शक्ति को भी उचित मोड़ दे दिया जाय, उसके साकार होने के लिए कोई मार्ग निर्धारित किया जाय, तो वह भी तोड़-फोड़ अथवा विध्वंस-

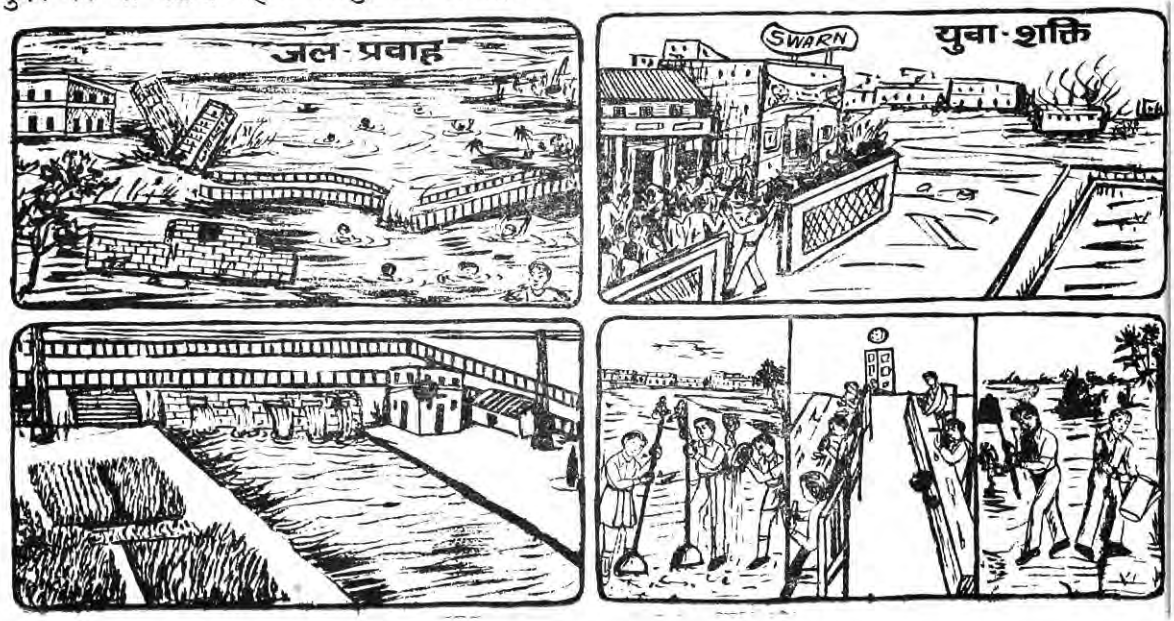

विनाश की बजाय रचनात्मक कार्य करने में कुशल सिद्ध हो सकती है।

हम देखते हैं कि जब युवक अपनी विचार शक्ति को विज्ञान के क्षेत्र में अनुसन्धान कार्य में लगा देता है तो वह कितने अच्छे आविष्कार करने में सफल हो जाता हे ! जब वह अपने बाहु-बल को ग्राम-विकास के कार्यों में लगा देता है तो जहां पहले वीरानी थी वहां फूल और फल खिले हुए दिखाई देते हैं।

परन्तु, इससे भी अच्छा तो यह कि मनुष्य को वह ईश्वरीय ज्ञान दिया जाय जो उसके जोश को होश दे, जो उसकी जवानी के साथ शीतलता को जोड़े और उसके गर्म रक्त की शक्ति को मर्यादा-युक्त कार्यों हैं जुटा दे। उसे वह योग सिखाया जाय जिससे वह समाज का सहयोगी बने और समाज की कुरीतियों, कुप्रथाओं और अकर्मण्यता और विकारों को समाप्त कर वहां दिव्य गुणों के पुष्प खिला दे।

ऐसा रचनात्मक कार्य ही एक ऐसी समाज की रचना करने में सफल होगा जिसमें स्नेह, सहयोग, भ्रातृत्व की भावना, कर्मठता, शीतलता, सन्तोष, शक्ति और शान्ति एक-साथ हों।

नवयुवक बचें—

युवा वर्ग अपने व राष्ट्र के चरित्र उत्थान में मुख्य योग दान दे सकते है—यदि वे इन बातों से बचें।

अशलील फ़िल्म : पिक्चर युवकों के मन पर बुरा असर डालती है। इस से अनेक बुरी आदतें पड़ जाती हैं।

कुसंग से : कुसंग या बुरे संग में आने से अनेक व्यसन युवकों में लग जाते हैं जिससे उनका भविष्य अन्धकारमय हो जाता है, अतः **अपने मित्र सोच समझकर बनायें।**

गुटबन्दी से : अपनी शक्तियों को व्यर्थ की राजनीति या गुटबन्दी में नष्ट न करें, ये उन्नति के साधन नहीं हैं।

फैशन से : आधुनिकता की दौड़ में फैशन की ओर आकर्षित न होकर भारतीय प्राचीन सभ्यता को नष्ट होने से बचायें।

सम्बोधन नवयुवकों से

हे नवयुवको : आइये, विश्व के नव निर्माण के लिए अपने तन मन धन का सर्वोच्च बलिदान दें। अपने एक एक खून के बूंद को कठिन परिश्रम के रूप में छिड़ककर इस धरती को हराभरा बनाएं।

हे महावीरो : अपनी वीरता से भारत मां की पुकार को साकार में लाएं, उसपर जो अत्याचार या पापाचार का बोझ बढ़ रहा है उसे जड़ से खत्म करें, अपने आदर्श जीवन से सारे जग को आदर्श बनाने की प्रेरणा प्रदान करें...

हे क्रान्तिकारी युवको : चलो, इस धरती पर नई आध्यात्मिकता की लहर फैला दें, हर एक के अन्धेरे मन में ज्ञानदीप जलाकर रोशनी करें, इस विश्व में शान्ति की किरणें फैलाकर भारत मां की गोद में एक सुन्दर, सुनहरे, मनमोहक स्वर्ग की पुनः स्थापना में हाथ बँटाएं और अपने अमूल्य जीवन को धन्य करें...

बिदर सेवा केन्द्र द्वारा देगलूर में "शान्ति प्रदायक प्रदर्शनी" का उद्घाटन वहां के कलेक्टर भ्राता बोर्डे जी ने किया। उद्घाटन के पश्चात् ब्र. कु. संतोष बोर्डे जी को चित्रों की व्याख्या दे रही हैं।

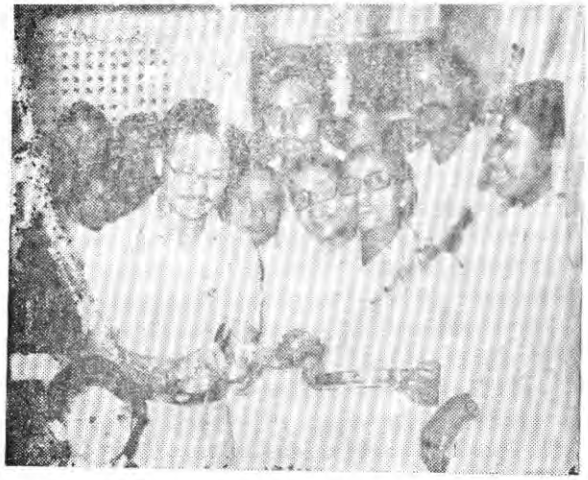

बोकारो क्लब में की गई प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता राम सिंह जी कर रहे हैं। ब्र. कु. सुमित्रा, कुसम तथा अन्य साथ में हैं।

डिब्रूगढ़ में राजयोग विश्व शान्ति आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन डिब्रूगढ़ वि० वि० के आसामीज विभाग के प्रधान भ्राता महेंन्द्र बोरा ने किया। ब्र.कु. रजनी चित्रों की व्याख्या कर रहीं हैं।

अंजार में आध्यात्मिक पुस्तकालय के उद्घाटन अवसर पर वहां के डिप्टी कलैक्टर भ्राता बी.डी दत्ता, गोरीशंकर, जोशी जी., ब्र कु. उमा तथा अन्य भाई बहन चित्र में दिखाई दे रहे हैं।

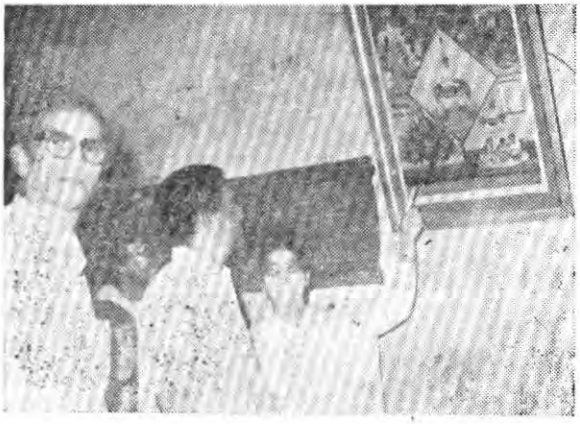

टकटपुर (म्यूरभंज) में राजयोग प्रदर्शनी के उद्घाटन पश्चात् ब्र कु. निरूपमा भ्राता सरतचन्द मोहान्ती को चित्रों पर समझाते हुए।

सचित्र सेवा समाचार

पेपर मिल्ज़-लखनऊ सेवा केन्द्र पर हुए आध्यात्मिक कार्यक्रम में विशेष आर्यसमाजी भाई बहन पधारे थे। पीछे मंच पर (बाएं से) ब्र. कु. सुमित्रा, ब्र. कु. भगवती, ब्र. कु. सती, तथा ब्र. कु. वीरबाला विराजरान हैं।

"समर्पित जीवन"–त्याग और तपस्या का

ब्र० कु० सूरज कुमार, आबू

उन आत्माओं के भाग्य वास्तव में ही सराहनीय हैं जिन्होंने प्रभु से सच्चा सौदा किया है। निश्चय ही वे बुद्धिमान हैं जिन्होंने अपना सब कुछ शिव पर चढ़ा दिया। निःसन्देह वे आत्माएं परमपूज्य हैं जिन्होंने अपनापन भी स्वाहा कर दिया।

यों तो आध्यात्म पथ पर कदम रखना ही त्याग व तपस्या का आह्वान करना है, परन्तु उसमें भी योगी जीवन बनाने का परम ध्येय तो त्याग व तपस्या से ही प्राप्त होता है। इस सर्वोच्च ध्येय की प्राप्ति के लिए समर्पणता ही सवश्रेष्ठ साधन है। ऐसे तो हर मनुष्य कहीं न कहीं, किसी न किसी पर समर्पित होता ही है, परन्तु ईश्वरीय मार्ग में हमारी समर्पणता स्वयं ईश्वर पर है। इस समर्पणता की गति अति गुह्य है, जो इसे जान लेता है, उसके लिए अन्य किसी पुरुषार्थ की आवश्यकता शेष नहीं रह जाती।

जैसे ही मनुष्यात्माओं ने यह जान लिया कि उन का परम प्रियतम परमधाम से उन्हें लेने आया है तो आत्माएं उसी तरह समर्पित होने के लिए आतुर हो उठीं जैसे शमा जलते ही पतंगे कुर्बानी के लिए व्याकुल हो उठते हैं। कोई सच्चे थे जो उस परम शमा पर फ़िदा हुए और कोई दूर से ही नमस्कार करके चले गये।

इस पुरुषोत्तम संगम युग पर अब तक हज़ारों आत्माएं स्वयं को आये हुए शिव पर बलि चढ़ा चुकी हैं। यों तो भक्त भक्ति में भी प्रभु अर्पण होते आये हैं, परन्तु यह अवसर परमपिता पर सम्मुख अर्पण होने का है। उन आत्माओं के भाग्य वास्तव में ही सराहनीय हैं जिन्होंने प्रभु से सच्चा सौदा किया है। निश्चय ही वे बुद्धिमान हैं जिन्होंने अपना सब कुछ शिव पर चढ़ा दिया। निःसन्देह वे आत्माएं परमपूज्य हैं जिन्होंने अपनापन भी स्वाहा कर दिया। हममें से अनेक आत्माएं ऐसा समर्पित जीवन जी रही हैं। यह सत्य है कि यदि पूरे सृष्टि-चक्र में प्राप्त आनन्द को मिला दें तो भी उससे कई गुणा सुख और आनन्द इस एक समर्पित जीवन में प्राप्त किया जा सकता है। तो हम यहाँ कुछ उन अनुभव-युक्त तथ्यों की विवेचना करेंगे जिनसे इस समर्पित जीवन को पूर्ण सफल बनाया जा सके।

समर्पणता केवल एक बार

हम जन्म जन्म भगवान की मूर्तियों पर जड़ पुष्प अर्पित करते आये परन्तु कितने धन्य हैं वे आत्माएं जिन्होंने स्वयं को, या वे माँ-बाप जिन्होंने अपने चेतन पुष्पों को चेतन शिव पर अर्पित कर दिया। परम प्रिय शिव उन पर कितने प्रसन्न होंगे और उन्हें मन चाहा वरदान देंगे। उन पुष्पों की सुगन्ध समस्त विश्व को सुगन्धित करने लगी। एक स्वच्छ मन अपने सच्चे प्रियतम को पहचानकर उस पर समर्पित हुए बिना नहीं रह सकता है। केवल एक बार नहीं, नहीं सम्पूर्ण कल्प में **एक ही तो बार** वह स्वयं आत्माओं का आह्वान करता है। अगर उसके आह्वान पर आत्माएं छोटे २ मन के बन्धनों को न तोड़ सकीं तो रावण की ज़ंजीरों को तोड़ना उन्हें अवश्य कठिन लगेगा। भगवान को प्राप्त करके, उसे अपना कह कर भी, यदि सवस्व अर्पित न किया तो उनकी बुद्धिमानी किस काम की? समर्पित जीवन बन्धन नहीं। **यह जीवन-बन्धन केवल उन्हें ही भासता है जो समर्पित होकर भी वास्तव में समर्पित नहीं होते।**

तन का समर्पण

यह सत्य है कि जीवन को समर्पित करना त्याग, तपस्या व साहस का परिचय देना है। धन दे देना—यह कोई विशेष बात नहीं। परन्तु अपने तन को सेवा में होम देना, यह कम साहस का विषय नहीं है। जिस तन से आत्मा हज़ारों वर्षों से चिपकी रही है, जिस तन के लिए ही कितने पाप और पुण्य किए हैं, उस तन की बलि चढ़ा देना हंसी नहीं है। और जो अपने तन को होम कर चुके हैं, निश्चय ही वे बहादुर हैं। अब इस तन का प्रयोग रुद्र यज्ञ में हो रहा है। ये तन की अथक सेवा ही तन, मन को बल प्रदान करती है। इस तन के बल की सफलता ही इसमें है कि ये तन-बल इस शिव-रचित-यज्ञ में काम आ जाए। अतः हे तन को समर्पित करने वाली रूहो, **इस तन को महायज्ञ में स्वाहा करके सफल बना**

लो। तब तुम तन-रहित फरिश्ते बन जाओगे और जन्म २ कंचन पवित्र काया प्राप्त करोगे।

कई आत्माएं अपने जीवन को एक क्षण में बलिहार कर देती हैं, परन्तु जीवन को दिव्य बनाने के लिए कुछ ठोस परिश्रम करना नहीं चाहतीं। अतः जब सब कुछ दे डाला, अपना कुछ नहीं रहा, तब देरी क्यों? **उठो और अपने लक्ष्य को पाने के लिये बीसों नाखुनों का ज़ोर लगा दो। शरीर का श्रृंगार तो बहुत किया, अब आत्मा का श्रृंगार करो। देखना, ये अनमोल घड़ियां कहीं यों ही न बीत जाएं!!**

जब हमने कहा—"हे शिवबाबा, ये तन तेरा"। तो इस तन पर उसी का अधिकार हो गया। **अब हम अपने इस तन को अन्य किसी पर बलिहार नहीं कर सकते अन्यथा भगवान को तन देकर फिर अन्य किसी को तन देना ये महापाप होगा।**

मन का समर्पण

तन समर्पित करने के बाद हमारी मुख्य शक्ति मन है। मन की समर्पणता का विषय अत्यन्त ही गुह्य है। इसको समझना व परखना केवल पवित्र बुद्धि का काम है। हमारा मन प्रभु का हो चुका, ये हमारा नहीं रहा अर्थात अब ये मन प्रभु की आज्ञा बिना कहीं नहीं जा सकता। अब हम अपने मन को अन्य किसी पर समर्पित नहीं कर सकते। अपने मन का आकर्षण किसी मनुष्य को नहीं बना सकते, वैभवों को नहीं बना सकते। हमारे मन की बागडोर शिव के हाथ में है। अर्थात् उनकी श्रीमत अनुसार मन का चलना ही मन की समर्पणता है।

मन समर्पित होने पर मन में परम शान्ति, ईश्वरीय सुख व आनन्द का सागर उमड़ने लगता है। मन पूर्ण पवित्र हो जाता है। **मन की समर्पणता ही उस परमप्रियतम के प्रति वफादारी कही जाती है। हम जांच करें कि हमारा मन कहीं जाता तो नहीं। हम अपना एक एक संकल्प शिव पर समर्पित करें तो मन का सम्पूर्ण व्यर्थ समाप्त हो जाएगा।**

कर्म का समर्पण

हमारे सभी कर्म यज्ञ प्रति हों, ईश्वरीय सेवा अर्थ हों—यह कर्मों की समर्पणता है। इससे मन, कर्म-बोझ से मुक्त हो जाता है। नहीं तो कर्म ही मनुष्य को चढ़ाता है, कर्म ही गिराता है। हम जो भी श्रेष्ठ कर्म करें, सुखदाई कर्म करें, महिमा योग्य कर्म करें, उसे शिव पर समर्पित करें, यही कर्मों की दिव्यता भी है और समर्पणता भी। इससे कर्त्तापन का भान भी समाप्त हो जाता है और मन सरल रहता है तथा फल की चिन्ता मन को बेचैन भी नहीं करती।

ऐसा कर्म समर्पित करने वाला योगी कभी-भी कर्म-बन्धन में नहीं बन्धता। यह कर्म-नाटक उसे खेल ही लगता है और व्यस्त जीवन का कटु अनुभव उससे दूर चला जाता है। उसे अनुभव होता है कि सब कार्य ईश्वरीय शक्ति द्वारा ही हो रहा है।

सम्पूर्ण समर्पणता ही सम्पूर्णता है—

इस प्रकार जब हम अपने तन, मन, कर्म, सम्बन्ध सबको परमपिता पर स्वाहा कर देते हैं तो हमारे कदम तीव्र गति से सम्पूर्णता की ओर चलते हैं। बाधाएं समाप्त हो जाती हैं, मन निश्चल हो जाता है, हृदय शीतल हो जाता है और हम सम्पूर्णता का आनन्द लेने लगते हैं। **जिस दिन से हम सम्पूर्ण समर्पण हो जाएंगे, उसी दिन से सम्पूर्णता का अनुपम आनन्द ग्रहण करने लगेंगे।** इसलिए सम्पूर्णता के इच्छकों को अपनापन सहित सब कुछ स्वाहा कर देना चाहिए।

इच्छाएं समर्पित

इच्छाएं ही मार्ग में बाधाओं का कारण हैं। समर्पणता के बाद प्राप्त निश्चिन्तता या तो मनुष्य को अलबेला बना देती है या महान लक्ष्य की ओर अग्रसर करती है। समर्पणता के बाद अलबेली हुई रूहें दिव्यता नहीं धारण कर पातीं और कष्टों का आह्वान कर लेती हैं।

प्रथम इच्छा—"मुझे इस प्रकार की ही सेवा मिले" यह मांग मार्ग में बाधक हो जाती है। परन्तु **यदि हम जीवन को परम कल्याणकारी की इच्छा पर छोड़ दें तो वह हमारे जीवन को योग्यताओं से भरपूर कर देता है।**

द्वितीय इच्छा—"सुख वैभवों की"—दूसरों को देखकर या समय अनुसार आत्माएं सुख के साधनों की ओर देखने लगती हैं। **वे यह भूल जाती हैं कि ये जीवन त्याग और तपस्या के लिए है।** ये इच्छाएं आत्मा में त्याग का बल नहीं भरने देतीं।

तीसरी इच्छा—"मान की"—थोड़ा कुछ करने पर भी मान की इच्छा बड़ा भारी विघ्न खड़ा कर देती है। दूसरों को मान मिलता देख कर आत्मा मान

को भिखारी बन जाती है। और मान न मिलने पर मान प्राप्ति का अनुचित रास्ता भी अपना लेती है जो कि उसके पतन का कारण बनता है।

इस प्रकार जीवन बलिदान करने वाली आत्मा को इच्छा को दुख व पतन का कारण जानकर त्याग कर देना चाहिए।

समर्पणता के बाद

जो परवाने शिव शमा पर बलि चढ़ गये, उस प्रत्येक परवाने को उस वरदाता ने वरदान देकर विश्व में चमकने के लिए भेज दिया। याद रहे— **कोई भी समर्पित आत्मा वरदानों से खाली नहीं है। और उन आत्माओं की सम्पूर्ण जिम्मेदारी परमपिता की है।**

हम समर्पित क्यों हुए ?

हमारी चिरकाल की अभिलाषा—"हे प्रभु, जब तुम इस धरा पर आओगे, अगर हमें ज्ञात हुआ तो हम तुम पर न्यौछावर होंगे" पूर्ण हुई। हम समर्पित किस लक्ष्य को पूर्ण करने के लिए हुए और जिस लक्ष्य से हम समर्पित हुए वही हम कर रहे हैं या जो हमें नहीं करना चाहिए, उसमें ही हम अपने सुनहरे क्षण बिता रहे हैं—यह हमें एकान्त में रमणकर चिन्तन करना है। हमें अपनी समर्पणता व त्याग के महत्व को भूल नहीं जाना है और मन में यह नशा समाना है कि, "ओह, मुझे परमपिता परमात्मा ने स्वीकार कर लिया"। अतः अब मुझे महान योगी बनना है और महान कार्य करना है।

निश्चिन्तता को निर्माण में लगाओ

सर्व समर्पण का प्रत्यक्ष फल है—**निश्चिन्त जीवन।** अब ये मन, ये बोल व्यर्थ न हों। एक एक संकल्प व सेकिंड अपनी और दूसरों की उन्नति में व्यतीत हो। हम अपनी स्थिति को योग-युक्त बनाकर उसे विश्व नव-निर्माण के महान कार्य में लगायें। अपने पुरुषार्थ का उच्चतम लक्ष्य निर्धारित करें और उसे पूर्ण करने में जी जान से लग जाएं।

तेरो मेरी माला तोड़ डालें

समर्पण अर्थात—हे प्रभु, सब कुछ तेरा, मेरा कुछ भी नहीं। तेरे-मेरे का व्यर्थ का रचा हुआ जंजाल आत्मा को कभी ऊंच लक्ष्य पर नहीं जाने देता। जबकि हमने अपना ही सर्वस्व दे डाला, फिर दूसरों का चिन्तन करने का अधिकार ही हमें कहां रहा। जब मैं-पन ही स्वाहा कर दिया तो मेरे को चिन्ता क्यों खाती है। अतः **हमारा निर्मल समर्पित जीवन गपशप और व्यर्थ चिन्तन में न बीते।**

समर्पित जीवन त्याग व तपस्या से भरा हो

इस जीवन में बाधाओं का कारण त्याग, तपस्या की कमी है। अथवा हम रहने, खाने, पीने, पहनने को ही जीवनाधार बना बैठे हैं। परन्तु ये निमित्त मात्र साधन तो संसार में भी प्राप्त हैं। तो हम इन क्षणिक और विनाशी साधनों में अपने अमूल्य जीवन को न उलझायें। हमारे पास त्याग की अनुपम शक्ति हो, जो कि हमारे सभी विघ्नों को समाप्त करेगी। जो समय पर त्याग नहीं कर पाते, वे ही जीवन में अशान्ति के बीज बोते हैं। अतः जिन्होंने अपने जीवन का बलिदान किया है, उन्हें समझना चाहिए कि ये जीवन केवल हंसने, खेलने व खाने के लिए नहीं है, बल्कि त्याग व तपस्या के लिए है और तब ही इस जीवन का सही मूल्य अनुभव होगा।

ईश्वरीय सेवा में सच्चाई व वफादारी बरतें

मिली हुई सेवा को ईमानदारी व वफादारी से करने से अत्यधिक ईश्वरीय बल प्राप्त होता है। दिल से की गई ईश्वरीय सेवा हमें ईश्वरीय प्रेम व शक्ति का पात्र बना देती है। अतः हम टूटे मन से या दिखावे से सेवा न करें बल्कि जिसने हमें सेवा दी है, उसके गुण-गान करते हुए उसके पूर्ण मददगार बनें। तब वह सदा ही हमारा मददगार है और विपत्तियों में हमारी जीवन नैया को सहज ही खेकर पार ले जाएगा।

अतः सर्वस्व न्यौछावर करके भी अगर विजयी माला में नम्बर न जीता, तो जीवन-त्याग का क्या महत्व। अगर भगवान का बनकर भी आत्मा पूर्णतया सन्तुष्ट न हुई तो फिर कब होगी ! अगर सब कुछ मिट कर भी सब कुछ पाने का अनुभव न रहा तो क्या लाभ ! अगर परमपिता के हाथ में सम्पूर्ण हाथ देकर भी सम्पूर्ण ईश्वरीय आनन्द से जीवन को ओतप्रोत न किया तो क्या किया !!

हमारा क्या होगा—ये न सोचो

ये निराशा न आने दो कि हमारा क्या होगा। तुम भूल जाते हो कि तुम किस पर समर्पित हुए हो। ज़रा संकीर्णता का पट खोलो और देखो, तुम्हारे लिए सब कुछ तैयार है। तुम इस जीवन को जैसा चाहो

बना सकते हो। हमने स्वयं को समर्पित किया और परमपिता ने हमें स्वीकार किया तो स्वयं भगवान हमारा हो गया, इससे श्रेष्ठ जीवन तो चारों युगों में हो ही नहीं सकता। और **भगवान जिसका साथी हो, उसे यह सोचना "कि मेरा क्या होगा" शोभा ही नहीं देता।**

हमारी योग्यताएं सेवा में नहीं लगती—यह नहीं सोचो—

वास्तव में हमें सभी योग्यताएं तो परमपिता ने ही दी हैं। ये हमारी नहीं हैं और जिसने दी हैं वह उन्हें सेवा में अवश्य लगाता है। वास्तव में हमारी विशेषताओं का उपयोग सेवा में स्वतः ही होता है—यह अति सूक्ष्म गति है। **जैसे कर्म कभी भी निष्फल नहीं जाते, वैसे ही योग्यताएं भी निष्फल नहीं जातीं।** यदि हमें अवसर ही नहीं मिलता तो हम रोज़ अमृतवेले अपनी विशेषताओं से समस्त विश्व में प्रकम्पन फैलाएं। हम अपनी विशेषताओं का प्रयोग स्वयं को योगी बनाने में करें। और यह सत्य है कि एक योगी आत्मा जैसा चाहती है, वैसा ही होता है।

हमारी जिम्मेदारी—

हम समर्पित आत्माओं की यह मुख्य जिम्मेदारी है कि जो भी नये नये खुशबूदार फूल शिव पर बलि चढ़ते हैं, हम उनकी पूर्ण सम्भाल करें ताकि वे फूल न मुरझायें। हम उनकी सुगन्ध को बढ़ाने व फैलाने में उन्हें पूर्ण योग दान दें। समर्पित योगी आत्माओं का पूर्णतया सहयोगी बनना, उनके मार्ग में विघ्न न बनना, उसके मार्ग के कांटो को चुन लेना, हम आत्माओं का बड़ा भारी पुण्य है। हम, जो बहुत काल से समर्पित जीवन का आनन्द ले रहे हैं, नये फूलों को वह आनन्द लेने का अवसर प्रदान करें और उनके जीवन-लक्ष्य को प्राप्त करने में उनकी पूर्ण मदद करें।

इसके लिए हमें याद रहे कि जिन्होंने स्वयं को स्वाहा कर दिया, चाहे वे गरीब हैं या साधारण, चाहे अशिक्षित हैं, या शिक्षित, सभी अति महान हैं। इससे बड़ी महानता और क्या हो सकती है। अतः हम सभी के लिए सम-भाव रक्खे और उन्हें आगे बढ़ायें। □

नैनीताल में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् चित्र में भ्राता पी. सी. कुकरेती, अतिरिक्त आयुक्त, उनकी पत्नी, तथा ब्र. कु. शीला, विमला अन्य खड़े है।

भावनगर सेवा केन्द्र द्वारा तलाजा टाऊन में आयोजित "घनिष्ट ईश्वरीय सेवा कार्यक्रमों" का उद्घाटन भ्राता मनी भाई बालधीया जी कर रहे हैं, ब्र. कु. गीता, मीना शोभा तथा अन्य साथ में खड़े है।

ईश्वरानुभूति

ब्र. कु. चक्रधारी, दिल्ली

काफी पहले वाराणसी में एक सेठ रहते थे जिनका नाम था ताराचन्द। वे करोड़पति थे। पिछली कई पीढ़ियों से उनका वंश धनवान था। उन्होंने कई धर्मशालाएं, कुएं, बावली इत्यादि बनवाये थे और कन्याओं की शिक्षा के लिए पाठशालायें भी खुलवाई थीं। केवल वाराणसी में ही नहीं बल्कि आस-पास भी यह प्रसिद्ध था कि ताराचन्द जी दान वृत्ति वाले सेठ हैं। समाचार पत्र भी उन द्वारा दान दिये जाने के समाचार छापा करते थे और सेठ जी उनको पढ़कर तथा मन्दिरों व धर्मशालाओं में लगे पत्थरों पर सबसे ऊपर अपना नाम पढ़कर तथा सभाओं के मंच से अपनी दानवीरता के बारे में घोषणा सुन सुन कर मन ही मन बहुत खुश होते थे।

सेठ जी सतसंग भी सुना करते थे और कथाओं-वार्त्ताओं में उनकी बहुत रुचि थी। उनके एक गुरु भी थे जिन्होंने सेठ जी को कृष्ण-भक्ति के लिए दीक्षा दी हुई थी। हर चार-छः महीनों के बाद उनके गुरु जी उनके यहां आकर ठहरा करते थे।

एक बार की बात है कि उनके गुरु जी उनके यहां आकर ठहरे और उन्होंने इस बात पर उपदेश दिया कि मनुष्य को ईश्वरानुभूति के लिए भी समय निकालना चाहिए क्योंकि हम मनुष्य हैं, श्रेष्ठ प्राणी हैं, हमें ही यह श्रेष्ठ अनुभव हो सकता है; आखिर हम गधे तो नहीं हैं कि आयु-भर संसार की जिम्मेदारियों से लदे रहें और सारा दिन कार्य-भार ढोते रहें और रात को थक कर चारा खाकर सो जायें और अगली प्रातः फिर भार ढोने चल पड़ें। उनके इस उपदेश का प्रभाव श्रोतागण पर पड़ा और सेठ ताराचन्द भी उससे प्रभावित हुए। थोड़ी देर बाद जब सब चले गए तो भरे मन से सेठ जी ने गुरु जी के पाँव पकड़ लिए।

गुरु जी बोले—"ताराचन्द, मालूम होता है कि कुछ कहना चाहते हो। कहो, अपने मन की बात को व्यक्त करने में संकोच मत करो।"

ताराचन्द—"महाराज, आज आपने उपदेश में ईश्वरानुभूति की बात कही थी न ?"

गुरु जी—"हां, कही तो थी। वही बात तो हम कहा ही करते हैं। बोलिए सेठ जी आपका क्या प्रश्न है ?"

ताराचन्द—"महाराज, मेरी कोई बात गलत हो तो क्षमा कीजियेगा। मैं निवेदन यह करना चाहता था कि आपने जो मुझे कृष्ण-भक्ति करने के लिए कहा था वह तो मैं नित्य प्रति किया ही करता हूँ; तब मुझे ईश्वरानुभूति क्यों नहीं होती ? मेरा विनय यह है कि आपके आशीर्वाद से मुझे भी वह अनुभव हो जाए।"

गुरु जी—"ताराचन्द जी, यह तो बताइये कि ठाकुर जी की सेवा में आपने कितने वस्त्र दे रखे हैं और कितनी धन-राशि का उनका श्रृंगार है और उनके लिए कितने सेवक नियुक्त हैं ?"

ताराचन्द—"महाराज, तीन जोड़े वस्त्र ठाकुर जी के लिए बने हुए हैं। ५००० रुपये का उनका श्रृंगार है और २ सेवक ठाकुर जी के देवस्थान के लिए निश्चित किए हुए हैं।"

गुरु जी—"और सेठ जी, आपने सेठानी जी के लिए कितने जोड़े बनवा रखे हैं; उनका श्रृंगार कितने रुपयों का है और देखभाल के लिए कितने सेवक नियुक्त हैं ?"

सेठ जी—"मेरे विचार में सेठानी के पास २५-३० जोड़े तो हैं ही और कम से कम २ लाख का उनका श्रृंगार है और ढेर सारे सेवक उनकी सेवा में उपस्थित हैं"—यह कहते हुए सेठ जी कुछ शर्मिन्दा-सा

महसूस कर रहे थे, उनके चेहरे पर भीनी-सी मुस्कराहट भी थी और उनकी गर्दन कुछ झुक-सी गई थी।

गुरु जी—"तब ताराचन्द जी ! आपकी अधिक प्रीति तो सेठानी जी से है। अच्छा, छोड़ो सेठ जी, यह तो बताओ कि धर्म के और क्या कार्य करते हो ?"

ताराचन्द—"महाराज, कई कुएं, बावली, धर्मशालाएं इत्यादि बनवाए हैं, कन्याओं के लिए पाठशालाएं खोली हैं जिनमें निर्धनों को निशुल्क शिक्षा मिलती है, शहर में एक मन्दिर भी बनवा रखा है और ऐसे ही कई कार्यों में दान तो होता ही रहता है।"

गुरु जी (मुस्कुराते हुए)—"परन्तु उसमें तो आपकी मान शान की भावना रहती है। आपकी रुचि तो यही बनी रहती है कि समाचार पत्रों में दान के बारे में समाचार छपे। अथवा विशाल सभाओं को यह बताया जाए कि सेठ जी बड़े दानी हैं। सेठ जी ऐसी स्थिति में ईश्वरानुभूति भला कैसे हो ? ईश्वरानुभूति तो उसे होती है जो प्रभु की कीर्ति सुनता है न कि अपने ही यशोगान में रुचि लेता है। कुछ त्याग हो, वैराग्य हो और फिर प्रभु से अनुराग हो तभी तो ईश्वरानुभूति होगी न।"

ताराचन्द –"समझ गया, महाराज।"

गुरु जी –"हां समझदार तो आप हैं ही। भाव यह नहीं है कि ठाकुर जी की सेवा में अधिक सेवक नियुक्त कर दिए जाएं। भाव यह है कि सर्वाधिक प्रीति उस प्रभु ही से हो।"

गुरु जी तो कुछ दिन के बाद चले गए और सेठ जी को अब इन दो बातों की धुन लग गई...एक तो यह कि सर्वाधिक प्रीति प्रभु से हो और दूसरी यह कि दान या धर्म कार्य किया जाए तो अपने नाम और मान के लिए नहीं बल्कि गुप्त किया जाए और उसे प्रभु अर्पित किया जाए।

अब सेठ जीसे कोई दान लेने आते तो सेठ जी उसे दान देते हुए कहते कि, देखो, यह किसी को न बताना कि कितना दिया है। इस बात को गुप्त ही रहने देना। एक बार तो यहां तक हुआ कि सेठ जी नदी के किनारे टहल रहे थे तो अचानक से देखा कि पानी के तेज़ बहाव के कारण एक बच्चे के पांव उखड़ गए हैं और उस बहाव में विवश बहता चला जा रहा है। सेठ जी ने स्वीमिंग का अच्छा अभ्यास किया था, वे अच्छे तैराक थे। वे नदी में कूद पड़े और लोगों के देखते-ही-देखते बच्चे को बाहर निकाल लाए और उसे किनारे पर खड़ा कर भीड़ इकट्ठा होने से पहले ही वहां से खिसक गये। ताकि लोग कहीं उनकी प्रशंसा न करने लगें। नदी में नहाने वालों में एक किसी पत्र के सम्पादक भी सम्मिलित थे। वे इस घटना को देखकर तुरन्त बाहर आए थे और उन्होंने सोचा था कि उनके समाचार पत्र के लिए यह एक अच्छा समाचार होगा। वे उस व्यक्ति से बात करना चाहते थे जिसने तुरन्त नदी में छलांग लगाकर बच्चे को निकाला था। परन्तु वह सम्पादक जैसे ही बाहर किनारे पर आये और निकालने वाले को देखने लगे तो इकट्ठे हुए लोगों ने बताया कि वह व्यक्ति तो तुरन्त चला गया था। सम्पादक महोदय को आश्चर्य हुआ। वे सोचने लगे कि वह कौन भला आदमी था जो इतना जल्दी चला गया। अगर मैं अपने वरिष्ठ समाचार पत्र में उसका नाम छापता, तो सरकार उसे अवश्य वीरता-पदक देती।

अगले दिन उसने अपने पत्र में वह समाचार छापा और साथ में यह भी लिख दिया कि डूबते बालक को बचाने वाला एक ऐसा भला व्यक्ति था जो फरिश्ते की तरह गुम हो गया। अगर सरकार को उस व्यक्ति का नाम पता चल जाए तो सरकार उसे साहस और सेवा के लिए अवश्य ही स्वर्ण-पदक (Gold medal) देगी। सेठ जी ने आप-बीती का यह समाचार पढ़ा और मुस्करा दिए।

जैसे-जैसे सेठ जी दान और धर्म के कार्य में गुप्त होते जा रहे थे और जैसे-जैसे उनकी प्रभु-प्रीति बढ़ती जा रही थी, वैसे-वैसे उन्हें अनुभव होता जा रहा था कि वे नैतिक एवं आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ते जा रहे हैं तथा उनका मन स्वच्छ, वृत्ति अन्तर्मुखी तथा स्थिति प्रसन्नमय होती जा रही है।

बच्चो, शिव बाबा ने भी हमें यही शिक्षा दी है कि हमें तन, मन, धन गुप्त रूप से ईश्वरीय सेवा में लगाना चाहिए। उसमें प्रशंसा अथवा मान-शान की इच्छा नहीं होनी चाहिए क्योंकि सांसारिक इच्छाएं मन को स्थिर नहीं होने देती और मन ईश्वर स्थिर न हो तो ईश्वरानुभूति नहीं हो सकती। ऐसे दान अथवा ऐसी सेवा से स्थूल प्राप्ति तो होती है परन्तु ईश्वरा-

नुभूति नहीं होती। इसके अतिरिक्त बात यह भी है कि जिससे मनुष्य की प्रीति होती है, उसका ही संग वह मन से करता है और जिससे संग अथवा सायुज्य हो अर्थात् जिससे मन जुट गए, अनुभव उसी का होता है। बाबा ने भी हमें ठीक कहा है कि "और संग तोड़, एक संग जोड़" अथवा "सर्व सम्बन्ध एक प्रभु से जोड़ो"—इस फार्मूले को याद रखते हुए हमारी बुद्धि की लग्न अथवा प्रीति एक प्रभु से होनी चाहिए। फिर, बाबा ने तो हमें प्रभु अथवा ईश्वर का वास्तविक परिचय भी दे दिया है क्योंकि "परिचय बिना होय न सच्ची प्रीति।" अब यदि हम उस परिचय के आधार पर 'प्रीत-बुद्धि' बन जाएं और मान-शान की भावना का त्याग करें तो प्रीत से अनुभव की प्राप्ति और त्याग से प्रभु-मिलन का सौभाग्य हमें प्राप्त हो सकता है। अब नहीं तो कभी नहीं।

रघुबरपुरा दिल्ली में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता मुकन्द लाल बिन्द्रा, क्षेत्रीय पार्षद दिल्ली नगर निगम द्वारा किया गया। चित्र में ब्र. कु. कमलमणि, ब्र. कु. जगरूप तथा अन्य ब्र. कु. भाई बहन खड़े हैं।

सचित्र समाचार

नरसिंहपुर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन कलैक्टर की धर्म पत्नी बहिन मंजू रावत कर रही हैं। साथ में ब्र. कु. कमल, सुमन, चन्द्रा, यशोदा एवं अन्य।

बुद्धि की तुला पर राजयोग की अवधारणाऐं

—आत्मा—

डा. निरंजन मिश्र, एम. ए. पी. एच. डी., अलवर

अगर भावनात्मक व्याख्या की जाए तो भक्ति मार्ग अंध प्रेम मार्ग है जिसमें भक्त ईश्वर को साकार रूप में अपने मन-मन्दिर में स्थापित करता है और उसकी याद में खोकर आनन्द की प्राप्ति करता है। यह भक्त की सच्ची लगन और सद आचरण पर निर्भर है कि वह परमात्मा के कितने निकट पहुंच पाता है। ज्ञान मार्ग में भी परम सत्ता की याद में ध्यान मग्न हुआ जाता है परन्तु वह ध्यान, याद या योग ज्ञान की पृष्ठ भूमि पर आधारित होता है। उसमें साधक अपने बारे में जानता है कि मैं कौन हूं, मेरी क्या वास्तविकता है, परमात्मा कौन है, क्या है, कैसा है तथा परमात्मा और मेरे बीच क्या सम्बन्ध है। चूंकि यह सारा ज्ञान पहले से ही होता है अतः ज्ञानमार्गी परमात्मा को किसी आकार में नहीं देखता। और चूंकि आकार में नहीं देखता अतः इस मार्ग में एकाग्रचित्त होने में कठिनाई होती है। यही कारण है कि कई बार ज्ञान मार्ग कइयों को नीरस एवं शुष्क भी लगता है।

तो निष्कर्ष यह निकला कि ज्ञानमार्गी को सैद्धांतिक ज्ञान होना वांछनीय है। ज्ञान मार्ग को प्रतिपादित करने वाले बहुत से गुरु हैं, अनेक पंथ हैं। परन्तु देखने की बात यह है कि किसी भी मार्ग की 'थ्योटिकल एप्रोच' (Theoratical Approach) कितनी सहज़ तथा बुद्धिगम्य है।

अध्यात्म क्षेत्र के दो प्रमुख बिंदु हैं—आत्मा एवं परमात्मा। इन बिंदुओं का स्वरूप निरूपण और परस्पर सम्बन्ध की व्याख्या ही अध्यात्म का लक्ष्य है। अतः किसी भी ज्ञानमार्ग की सार्थकता को बुद्धि की तराजू पर तोलने का मतलब यही होगा कि उसके द्वारा परिभाषित आत्मा और परमात्मा के स्वरूप का विवेचन किया जावे।

इस भौतिकवादी युग में अधिकांशतः ऐसे लोग हैं जिन्हें 'स्व' का ज्ञान नहीं है। 'मैं कौन हूं' जैसी जिज्ञासा शायद ही उनके मस्तिष्क में कभी उभरती है। उन्होंने अपने ज्ञान की इति हाड मांस के पुतले के ज्ञान में ही कर ली है। कई अच्छे पढ़े लिखे लोग भी आत्मा के अस्तित्व में शंका करते हैं। मेरे एक एडवोकेट मित्र हैं, वे मानव की चैतन्यता को 'बायलौजीकल' क्रियाओं से जोड़ते हैं, आत्मा नाम की किसी चीज़ में विश्वास नहीं करते ! खैर !

आत्मा के अस्तित्व का सबसे पुष्ट प्रमाण पुनर्जन्म है। लगभग सभी आध्यात्मिक मार्ग यह मानते हैं कि इस शरीर को चलाने वाली कोई चैतन्य शक्ति है जो शारीरिक इन्द्रियों द्वारा अपना कार्य संचालन करती है। वह शक्ति अजर और अमर है, उसका नाश नहीं होता। शरीर वस्त्र मात्र हैं। यहाँ तक कि बौद्ध धर्म, जो आत्मा की निरन्तरता में विश्वास नहीं करता, भी जीवन प्रवाह को इसी शरीर तक सीमित नहीं मानता। जैन धर्म की मान्यता है कि प्रत्येक जीव में आत्मा का निवास है, आत्मा अमर है, निरंतर है।

एक सत्य घटना

सत्य क्या है, यह एक अलग प्रश्न है लेकिन कुछ बातें ऐसी हैं जो जीवन में घटित होती हैं और बौद्धिक व्यक्ति को उनसे कुछ आभासित होता है, दिशा निर्देश होता है। मेरे श्वसुर की जयपुर में दिनांक ६ सितम्बर १९७९ को अप्राकृतिक परिस्थितियों में मृत्यु हुई। मैं स्थल पर मौजूद था। उनका प्राण पलायन रात्रि को लगभग २½ बजे हुआ। उनके एक बड़े नज़दीकी मित्र हैं पुरोहित जी। उस दिन वे गोहाटी (आसाम) में एक होटल में सोये हुए थे। उसी रात लगभग ३ बजे उनके कमरे के दरवाजों पर खटखटाहट होती है, आवाज़ आती है, पुरोहित जी खोलो·····। वे हड़बड़ा कर उठते हैं। आवाज़ तो·····जी की सी लगती है। उसी सुषुप्त अवस्था में प्रतीत होता है कि श्री·····अपनी चिरपरिचित वेशभूषा खादी के सफेद कुर्त्ता धोती में हैं और कह रहे हैं·····(कथन को किसी कारणवश उद्धृत किया जा रहा है) सब कुछ सैकेंडस में घटित हो जाता है। पूरी तरह जागने एवं होश आने पर पुरोहित जी देखते हैं कि दरवाजे की चटकनी अंदर से बदस्तूर उसी तरह बंद है। घंटों बेचैनी रहती है। उसी बैचेनी की मानसिकता में वे इस सारी घटना को पोस्टकार्ड में लिख-

कर भेजते हैं। यह पोस्टकार्ड हमें जयपुर में छठवें दिन प्राप्त होता है। यह उल्लेखनीय है कि उन्हें श्री···की आकस्मिक मृत्यु के बारे में कई दिन बाद पता चलता है।

प्रश्न उठता है कि वह क्या चीज़ थी जो मिनटों में जयपुर से गोहाटी पहुंच गयी ? क्यों वह आवाज़ और स्वरूप श्री·····जैसे ही प्रतीत हुए ?

और लें···। कभी सोचा है कि भूत प्रेत के किस्से और घटनायें हिन्दुओं की अपेक्षा ईसाइयों तथा मुसलमानों में ज्यादा क्यों होते हैं ? बनारस विश्व-विद्यालय में प्रोफेसर रहे प्रसिद्ध योगी एवं तंत्र शास्त्र के प्रकांड विद्वान महामहोपाध्याय गोपीनाथ जी कविराज, जिन्हें भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद बहुत सम्मान देते थे, ने अपने एक लेख में बंगाल की एक महिला के बारे में लिखा है। अपने पति की मृत्यु होने पर इस महिला ने अपने पति की आत्मा का आह्वान किया तथा उससे शरीर त्यागने के पश्चात से लेकर अन्त तक सारा विवरण पूछा। माध्यम के द्वारा जो वर्णन उसके पति की आत्मा ने दिया, वह इस प्रकार हैं—

"बहुत देर तक मैं उसी कमरे में रहा। लगता था मैं ऊपर उठ रहा हूं। तुम सब लोग मेरे पार्थिव शरीर से लिपटकर रो रहे हो। दुख मुझे भी हो रहा था, कभी अपने शरीर को देखकर जो अकड़ा पड़ा था, कभी तुम लोगों के विलाप को सुनकर, लेकिन मुझे यथार्थ का भी ज्ञान होता जा रहा था ·····"

सुस्पष्ट है कि आत्मा को भी शरीर छोड़ने के बाद वह दृश्य देखने की उत्सुकता हो सकती है। कई बार मोह बंधन इतने जकड़े होते हैं कि आत्मा वहीं भटकती रहती है। कभी २ यह भटकाव घण्टों का ही नहीं वरन महीनों और वर्षों का हो जाता है। पुनर्जन्म की जितनी घटनाएं रिकार्ड की गयी हैं उनमें एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर को धारण करने के बीच की अवधि कुछ मिनटों से लेकर १० वर्ष तक की रिकार्ड की गयी है। और आत्मा के इस प्रकार के भटकाव का ही कारण है कि प्राण छूटते ही यथा-सम्भव शीघ्र इस पार्थिव शरीर को नष्ट करने की प्रथाएं चल पड़ी हैं। हिंदुओं में शरीर को अविलम्ब जला दिया जाता है। यह प्रथा तुलनात्मक रूप में अच्छी भी है। शरीर ही नहीं रहेगा तो निकली हुई आत्मा को लगाव या मोह किससे होगा ? ईसाइयों एवं मुसलमानों में मृत शरीर दफ़नाया जाता है जो कई दिनों में जाकर नष्ट होता है और हड्डियों का ढांचा तो वर्षों सुरक्षित (दबा हुआ) रहता है। यही कारण है कि उन लोगों में मोहवश भटकती आत्माओं, जिन्हें हम भूत प्रेत कहते हैं, के किस्से ज्यादा मिलते हैं।

पुनर्जन्म के साथ २ विविध योनियों की अवधारणा भी विचारणीय है। हमारे संस्कारों में एक बात घर कर गयी है कि आत्मा को चौरासी लाख योनियों में से होकर गुज़रना पड़ता है और जन्म मृत्यु का यह क्रम मोक्ष तक चलता रहता है और कि मनुष्य योनि एक बार ही मिलती है तथा योनि का स्वरूप निर्धारण भी कर्मों के अनुसार होता है। औसत भारतीय के मस्तिष्क में ये दोनों बातें इतने सहज रूप में बैठी हुई हैं कि इससे परे वह सोच नहीं पाता। इस संदर्भ में मैं यहां दो बातों की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा।

प्रथम : पुनर्जन्म के हज़ारों ऐसे प्रकरण हमारे सामने आते हैं जबकि कोई बच्चा अपने पूर्व जन्म के संस्मरण सुनाता है, सम्बन्धित व्यक्तियों तथा स्थलों को पहिचानता है तथा उसके पूर्वजन्म से सम्बन्धित व्यक्ति भी उसके कथनों को प्रमाणित करते हैं। **क्या आज तक किसी ने यह बताया है कि मैं अपने पूर्व जन्म में गधा, घोड़ा, कुत्ता, शेर, बिल्ली या सांप था।** ऐसा कोई प्रकरण पराविज्ञानियों के समक्ष प्रस्तुत नहीं हुआ। इससे प्रतीत होता है कि मनुष्य की आत्मा बार-बार मनुष्य का तन ही धारण करती है।

द्वितीय : यह भी कहा जाता है कि कर्मों के अनुसार योनि मिलती है। बुरे कर्म करने पर नर्क समान यातना भोगने के लिए अधम पशु योनि धारण करनी पड़ती है। **अगर यह सच है तो बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में रहने वाले लोगों में से अधिकतर को** (क्योंकि अधिकांश के आचरण खराब हैं) **पशु योनि मिलनी चाहिए।** फिर तो जनसंख्या स्वतः ही क्रमशः कम होती जानी चाहिए। परन्तु यथार्थ इसके ठीक विपरीत है।

उपरोक्त पृष्ठभूमि को समक्ष रखते हुए आत्मा के सम्बन्ध में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-

विद्यालय के विचारों पर मनन करें तो लगेगा कि ज्ञानमार्ग के प्रवेशार्थी के लिए वे कितने सरल, सहज एवं बुद्धिगम्य हैं।

इस अवधारणा के अनुसार आत्मा इस शरीर को चलाने वाली, आंखों द्वारा देखने वाली, मुख द्वारा बोलने वाली और कानों द्वारा सुनने वाली एक चैतन्य शक्ति है जो स्वरूप में अति सूक्ष्म ज्योति बिंदु के समान है। आत्मा अजर, अमर, अविनाशी है। मानव का शरीर वस्तुतः एक रथ है जिस पर आत्मा रथी की तरह आरूढ़ है। मानव शरीर आत्मा की वेशभूषा है जिसे पहनकर वह सृष्टि रंगमंच पर अपना पार्ट बजाती है। इस अनादि और अनंत सृष्टि क्रम में मानव आत्माएं मानव तन ही धारण करती हैं। दूसरे शब्दों में मानव एवं जीव जन्तुओं को चैतन्यता प्रदान करने वाली आत्माओं का कार्य क्षेत्र आदि-अनंत काल से पृथक-पृथक है और इनके क्रियाकलाप एक सुव्यवस्थित अनवरत प्रक्रिया के अंग हैं।

कविता

"राखी की शुभ बधाई"

ब्र० कु० ज्ञानेश्वर, मधुबन, आबू

हे मेरे नवयुवक भाई
राखी की शुभ बधाई

ये अनोखा राखी बन्धन
है सबसे सुखद निराला,
करेगा मुक्त सभी दुखों से
जो द्वापर से तुमने झेला,
बांध के ये पावन राखी
कर लो आत्मा की सफाई,
हे मेरे नवयुवक भाई·····

सिखा कर ये सच्चा प्रेम
जीवन में लाती है बहार,
मिटाकर सब आपसी झगड़े
लाती सुख शान्ति का संसार,
बनो अब प्रेम के अवतार
तो पाओ सतयुग में राजाई,
हे मेरे नव युवक भाई···

ये तिलक है सबसे न्यारा
जो देता आत्मा की स्मृति,
पवित्रता के वरदान को पाकर
आत्मा सदा खुशी में झूलती,
तोड़कर सब दुनिया के रिश्ते
करलो शिव से तुम सगाई,
हे मेरे नवयुवक भाई·····

पुराने झूठे पाप कर्मों की
खर्ची ही मुझे तुम देना,
दिव्य गुणों से सजाकर
आत्मा का शृंगार करना,
छोड़ दे विकारों से नाता
ये दुनिया है पराई,
हे मेरे·····

पावन बनकर हर आत्मा को
सच्ची राह दिखाना तुम,
अन्धेरे मन में ज्ञान-दीप जला के
विश्व शान्ति में हाथ बटाना तुम,
ये अनोखी दिव्य राखी ही
खुशियों का भण्डार ले आई,
हे मेरे नवयुवक भाई·····
राखी की शुभ बधाई

मृग तृष्णा

ब्र०कु० अंजू, मुजफरपुर

सड़क के एक चौराहे पर अविराम दौड़ का दृश्य !

कुछ रिक्शा, कार (Car) या अन्य वाहन आ जा रहे हैं। कहीं कई मनुष्य अकेले या समूह में, कोई हाथ में थैले, कोई ब्रीफकेस या अन्य सामान, कोई खाली हाथ, कोई खाने के सामान के लिए, कोई संबंधियों से मिलने, कोई आफिस या अन्य व्यवसाय के लिए- कोई अपने घर की तरफ ! कुछ समय पश्चात् सर्व की मंज़िल आयेगी लेकिन क्या यही उनके जीवन की वास्तविक मंजिल है ? क्या फिर आना जाना बंद हो जायेगा ? नहीं। दुनिया के चौराहे पर आज मनुष्य पुनः दौड़ता दिखाई देता रहता है। ऐसी दौड़ में शामिल हैं ये लोग, जिनकी मंजिल मृगतृष्णा के समान है। मंजिल दिखायी देती है, किन्तु नज़दीक आती नहीं।

यूं तो कहने वाले कह गए कि मनुष्य को जीने के लिए क्या चाहिए—दो रोटी, दो कपड़ा और रहने के लिए मकान। लेकिन क्या मानव-जीवन केवल इसी के लिए है ! सभी जीवों में बुद्धिमान मानव भी पशु के समान इन्हीं चीजों के पीछे जीवन की दौड़ लगा रहा है ! मानवीय मर्यादा एवं मानवीय गुणों को त्यागकर अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए कौन से कुकृत्य बाकी रह गए करने को ? ये चीज़ें तो सागर की एक-दो बूंद के बराबर हैं। ये राही किसी सड़क पर नहीं बल्कि अपनी इच्छाओं के सागर पर चल रहे हैं जिसमें एक के बाद दूसरी लहरें उठती रहतीं है एवं किनारा कहीं नज़र नहीं आता। पार करना है सागर और आधार है "स्वार्थपरता की नैया"। जो कि पतली तख्ती के समान है। जीवन का कोई भरोसा नहीं, कभी भी खत्म हो सकता है, अन्य साथियों पर विश्वास नहीं, कब धोखा दे दें, फिर कौन है जो उसे सम्भालेगा, लेकिन समझ कहां ?

मनुष्य चाहता है ये पहनें, वो खायें, ये देखें, वहां घूमें। लेकिन ज्यों-ज्यों पूर्ति होती है, त्यों-त्यों ये पूर्ति आग में घी का काम करती है। इच्छा और ही बढ़ती जाती है। इच्छाओं के इस दौर ने ही आज इतना विशाल रूप ले लिया कि अंतरिक्ष की सैर करना भी बड़ी बात नहीं, फिर देश-विदेश की तो बात ही क्या। सैर-सपाटे, खान-पान के इच्छा की पूर्ति में कितना धन नष्ट होता है, फिर भी शरीर (Body) और चरित्र (Character) का ख्याल किए बिना क्षणिक सुख पाने की चाह है ! जरा सोचकर देखिये—सागर के किनारे खड़े हों आप और बीच में कोई चमकती चीज़ दिखायी दे तो आप उसे अगर सच्चा हीरा समझकर उसे पाने के लिए कूद पड़ें तो क्या होगा ? न चीज़ मिलेगी और न आप बचेंगे। ठीक यही हाल आज के मनुष्यों का है। क्षणिक सुख के पीछे दौड़कर ही मानव धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट बना है।

इच्छा माना कामना। कितनी भंयकर है ये कि इसकी पूर्ति होने पर लोभ की उत्पत्ति और पूर्ति न होने पर क्रोध की उत्पत्ति होती है। ये दोनों ही मनुष्य के एवं समस्त विश्व के दुश्मन हैं। इसका ही परिणाम है आज हिंसा, चोरी-डकैती, 'अपहरण की घटनायें सर्वत्र व्याप्त हैं। इसी के कारण गरीबों एवं अमीरों के बीच की खाई गहरी होती चली जा रही है। विश्व दो भागों में बंट गया है, सगे संबंधी दुश्मन बन गए हैं। क्रोधवश ही घातक हथियार एवं बाम्बस (Bombs) आदि बनाकर इसने सारे विश्व को महा-विनाश के कगार पर खड़ा कर दिया है।

तो प्रश्न यह उठता है कि क्या हम इच्छाएं मिटा दें ? नहीं-नहीं। इससे तो क्रोध की उत्पत्ति होगी और जीवन नीरस हो जायेगा। ज़रा एक नज़र उन राज-ऋषियों पर भी डालिए जो इन इच्छाओं की पूर्ति की दौड़ से न्यारे रहकर भी सदा हर्षित एवं सुखी रहते हैं। ये राजयोगी सच्ची सुख-शान्ति की अनुभूति करते हैं।

परमात्मा ने हमें इस दुनिया से वैराग दिलाया। खान-पान का परहेज कराया। अत्यधिक धन कमाने की इच्छा को हटाया ताकि इसके लिए अपनाए जाने वाले भ्रष्ट तरीकों से छुटकारा मिल सके। सादी पोशाक पहनायी ताकि पहनने और सुख भोगने की दौड़ में बुद्धि न जाए। तो क्या इसका मतलब ये है कि

ईश्वर ने हमारी इच्छाओं को दबा दिया है? क्या योगी जीवन नीरस है? क्या इनके जीवन का उद्देश्य कुछ भी नहीं? क्या ये समाज में नहीं रहते? आज अनेक प्रकार की इच्छाओं की पूर्ति मनुष्य जिस ईश्वर से चाहता है वो अपनी सच्ची सन्तान के लिए ऐसा नहीं कर सकता। उन्होंने हमारी इच्छाओं के आगे **अभी** के लिए शब्द हटाकर "**सदाकाल**" शब्द लगाया (Add) है। हमारी इच्छाओं को स्वयं के प्रति ही नहीं बल्कि **सर्व के प्रति** जागृत किया है। राजयोगी न तो क्षणिक सुख चाहता है न हो एक जन्म के लिए बल्कि ईश्वरीय मतानुसार वह भविष्य जन्म-जन्मान्तर के लिए चाहता है। राजयोगी परमात्मा की सन्तान होने के नाते विश्व की समस्त आत्माओं को परिवार मानकर सभी के लिए शुभ कामना करता है। धन (Wealth) की कामना के बदले परमात्मा ने वर्तमान में ज्ञान-धन से सर्व की सेवा करनी सिखायी जिससे भविष्य में १००% सुख-शान्ति सम्पत्ति मिलती है। मकान हो, सारे सुख हों, इस इच्छा को अपार जागृत किया कि सतयुग-त्रेता में सोने-चांदी के महल हों, सुख का संसार मिले,—ऐसा मार्ग बताया। ऊंचा पद मिले, तो सतयुगी विश्व-महाराजन, विश्व महारानी का पद किसी से कम है क्या? आयु चाहिए, निरोगी काया चाहिए, लेकिन देवता जैसा बनकर अमरलोक का मालिक बनना कम बात है क्या? वहां अकाले मृत्यु होती नहीं। खान-पान की इच्छा को भी इतना जागृत कराया कि सदाकाल के लिए ये सुख प्राप्त हों, स्वर्ग का तो गायन है वहां ५६ प्रकार के भोजन, ३६ प्रकार के मेवे होते थे, घी-दूध की नदियां बहती थीं। हीरे-जवाहरात तो महलों में यूं ही जड़ित रहते थे।

कहते हैं प्रभु रक्षा करो। इसी क्रम में आज बने हुए घातक हथियार शत्रु को मारने के काम में नहीं बल्कि स्वयं के कुल का ही नाश करेंगे। ओह! इस इच्छा ने क्या दुर्गति कर दी मानव की!

मनोरंजन! मनोरंजन-मनोरंजन! खाने को रोटी न हो, तन पर कपड़ा न हो, भले ही फुटपाथ पर सोते हों, फिर भी हर मनुष्य गरीब या अमीर मनोरंजन को कितनी प्राथमिकता दे रहा है कि आखें मूंदकर गंदे से गंदे मनोरंजन से भी बाज नहीं आता। चाहे वो चरित्र का ह्रास करने वाला हो या धन का। गरीब अमीर इस जगह आकर एक हो जाते, भले ही बैठने की सीट अलग हो —

"सिनेमा के काउन्टर पर, भयी लोगन की भीड़,
टिकट लेवन को चल पड़े, राजा-रंक फकीर॥"

टी०वी०, रेडियो, वाइस्कोप, नाईट क्लब, वेश्यालय (Brothel) एवं अश्लील साहित्य इसी उद्देश्य से बने हैं जहां मनोरंजन को प्राथमिकता दी गयी है। **परमात्मा ने हमें नीरस नहीं बनाया बल्कि बताया कि मनोरंजन ऐसा होना चाहिए जो 'मन' का 'मंजन' अर्थात् मन को शुद्ध करने वाला हो।** देवता नीरस थे क्या? योगी उदास नहीं रहते बल्कि अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति का गायन तो उनका ही है। अतः चरित्र में सुधार हो, ऐसा मनोरंजन सिखाया।

अतः कहने का तात्पर्य यह है कि अपनी इच्छाओं को सारे विश्व की आत्माओं के कल्याणार्थ समर्पित करो। सदाकाल के लिए सुख-शांति-वैभव मिले, ऐसा कर्त्तव्य करो, इसके लिए बताया गया पुरुषार्थ, त्याग प्राप्ति की भेंट में नहीं के बराबर है।

कोननगर (कलकत्ता) में प्रदर्शनी के उद्घाटन पश्चात् ब्र. कु. अरुणा गाडेस रक्षाकाली माता मन्दिर के सचिव भ्राता गोष्ठा आदक जी को ईश्वरीय सौगत भेंट करते हुए।

नाटक

"रक्षा का बन्धन–पवित्रता"

लेखक—ब्र०कु० मोहन, अमृतसर

पात्र—१. प्रेरणा २. प्रेरणा का पिताजी (बापू जी) ३. प्रेरणा का भाई सुनील (बाद में छोटू कैदी) ४. ब्रह्माकुमारी बहन ५. चौधरी का लड़का राकेश ६. जेलर ७. कैदी लखनसिंह

पहला दृश्य

(प्रेरणा अपने घर में अपने बुजुर्ग पिता के साथ बात करते हुए)

पिता : प्रेरणा बिटिया तू आ गई। अच्छा हुआ, मुझे पानी का एक गिलास देना, मैं दवाई ले लूं।

(घबराई सी प्रेरणा थर्राती आवाज में)

प्रेरणा : लीजिए बापू पानी।

पिता : बिटिया, तेरी आंखों में आंसू, क्या बात है?

प्रेरणा : कुछ नहीं बापू, कुछ नहीं।

पिता : प्रेरणा, देख, अभी बुढ़ापे में मैं ही तेरा पिता हूं तो मां भी। आज अगर तेरी मां होती तो तू उसे सब कुछ सुनाती और वो तेरे दुख देख भी ना पाती। मेरा दिल तो सुनील के दुखों ने वैसे ही पत्थर कर दिया है।

प्रेरणा : नहीं बापू, आप कुछ मत सोचो, मैं बुढ़ापे में आपको दुखों की बातें सुनाना नहीं चाहती।

पिता : तुझे मेरी कसम बिटिया, जो भी हो तुझे मेरे को सुनाना ही है।

प्रेरणा : बहुत दिनों से मैं सहन कर रही थी बापू, पर आज मैं अपने आंसुओं को समा ना सकी।

पिता : आखिर बात क्या है, सुनील ने कुछ कह दिया क्या?

प्रेरणा : नहीं बापू, वो जो चौधरी का लड़का राकेश है ना (रोते हुए)

पिता : हां हां बोल, क्या कहा उसने, कुछ बुरा बोला क्या?

प्रेरणा : नहीं बापू, बहुत दिनों से मेरे पीछे पीछे आता है। जैसे ही मैं कालेज से निकलती वो मेरा पीछा करता है। आज हमारे मकान के पास बहुत देर तक खड़ा रहा।

पिता : क्या कहा उसने?

प्रेरणा : मुझे बहुत डर लगा और मैं जल्दी से अन्दर आ गई।

पिता : प्रेरणा, सुन, तू चुपकर और किसी से कोई बात नहीं करना, एक दो दिन देख और कुछ कहे तो मुझे बताना। मैं चौधरी जी को बोल दूंगा। चौधरी साहब अच्छे आदमी हैं, वह समझा देंगे उसको। तुम सुनील को कुछ नहीं बताना।

(इतने में सुनील प्रेरणा का भाई क्रोध से भरा आता है)

सुनील : मैंने सुन लिया है सब कुछ, और मुझे कुछ सुनना भी नहीं। मैं देखूंगा, राकेश जिन्दा कैसे रहता है।

प्रेरणा : नहीं नहीं भइया, आप लड़ना नहीं, वह लोग पैसे वाले हैं, सभी उन्हीं की सुनेंगे, हमारी कोई नहीं सुनेगा।

पिता : सुनील बेटा, तुम मेरी बात सुन, जोश में कुछ नहीं होता। मैं स्वयं उनसे बात कर लूँगा।

सुनील : आपकी बात वह लोग थोड़ेही सुनेंगे, उन्हें तो पैसे का अभिमान है।

प्रेरणा : भइया, आप कुछ नहीं करना मैं खुद कुछ कर लूंगी। कल से मैं अपनी सहेलियों को कहूंगा, मुझे घर तक छोड़कर जायें। ज्यादा बात होगी तो फिर देखेंगे क्या करना है।

दूसरा दृश्य

(राकेश प्रेरणा के पीछे से कुछ बात करते, डरते डरते आ रहा है)

राकेश : प्रेरणा, मैं, मैं आपसे एक बात करना चाहता हूं।

(प्रेरणा गुस्से में)

प्रेरणा : क्यों क्या बात है आप कौन होते हैं मेरे से बात करने वाले। जवान लड़कियों के पीछे आते शर्म नहीं आती तुमको।

राकेश : बहन, मेरी बात तो सुनों।

प्रेरणा : गन्दी दृष्टि रख बहन कहते हो। कुछ ख्याल आना चाहिए तुम लोगों को। बहन का अर्थ भी समझते हो।

राकेश : प्रेरणा, मेरी बात तो सुनो, सच्च, मैं आपको बहन की दृष्टि से देखता हूं।

प्रेरणा : बहनों के पीछे लोग चक्र लगाते हैं क्या ? तुम्हारे जाल में फंसी नहीं तो अभी बहन की दृष्टि बना ली है। खबरदार जो दुबारा मेरे पीछे आने का साहस किया तो ··

राकेश : बहन, मुझे आप गलत समझ बैठी हैं, मैं तो आपको यही कहना चाहता था···

प्रेरणा : क्या कहना था, मुझे आपने ?

राकेश : बात यह है कि मेरी कोई बहन नहीं हैं और हर रक्षाबन्धन पर जब शहर में, मुहल्ले में हर भाई की कलाई पर बहन भाई के पवित्र प्यार भरे नाते का रक्षाबन्धन देखता हूं तो मुझे बहुत दुख होता, मैंने सोचा···

प्रेरणा : हां हां, बोलिए क्या सोचा आपने ?

राकेश : मैंने सोचा कि आपको धर्म की बहन बना लूं। और मैं भी बहन का प्यार पाने के लिए लायक बन सकूं।

प्रेरणा : ओह ! मुझे माफ करना राकेश भईया। मैंने आपको गलत समझ लिया था। मुझे आप धर्म की बहन बनाना चाहते हो पर यह कार्य मैं नहीं कर सकती।

राकेश : क्यों भला ! मैं किसी को बहन बनाने लायक भी नहीं।

प्रेरणा : बहन या भाई बनाना कोई सरल बात नहीं है। धर्म की बहन तो वो ही बन सकती है जो धर्म को अच्छी तरह से जानती हो।

राकेश : तो क्या आप मेरी बहन बनना नहीं चाहती।

प्रेरणा : ऐसी बात नहीं, मैं आपको ऐसी बहनों से परिचय कराऊँगी जो सदा के लिए आपकी बहनें तो बन ही जायेंगी, साथ में आपके जीवन में सुख शान्ति कैसे रहे वो भी बतायेंगी।

राकेश : वो बहने कौन हैं ?

प्रेरणा : वो हैं ब्रह्माकुमारी बहनें, जो विश्व को स्वर्ग बनाने के लिए अपना तन-मन-धन और समय, संकल्प शक्ति सब कुछ लगा रहीं हैं।

राकेश : ब्रह्माकुमारी बहनें, उनका आश्रम तो हमारे घर के पास ही है।

प्रेरणा : हां, वो तो रोज़ मेरे भाई को भी समझाती हैं कि विकारों को छोड़ना चाहिए। उनकी बातें सुन कर तो हमारे पिताजी ने शराब सिग्रेट आदि सब छोड़ दिया है। और मेरा भी लक्ष्य है कि मैं भी पढ़ाई पूरी कर ब्रह्माकुमारी बहनों जैसी ईश्वरीय सेवा करूँ और पवित्र जीवन व्यतीत करूँ।

राकेश : वो बहनें बुराइयां छुड़ाती हैं ?

प्रेरणा : हां, क्योंकि हमें देवताओं जैसे चरित्र वाला बनना है।

राकेश : अच्छा, तो वो मेरी बहनें बनना स्वीकार करेंगी।

प्रेरणा : हां हां, वो ब्रह्माकुमारी बहिनें तो सबकी बहनें हैं। वह हर वर्ष हर वर्ग, हर जाति के व्यक्तियों को राखी बांधती है। बहनों ने आज मेरे भाई सुनील को भी राखी बांधी और समझाया कि मनुष्य को दुख देने वाली बुराईयों को छोड़ना चाहिए।

राकेश : तो मुझे भी उन बहनों के पास ले चलो ना।

प्रेरणा : ऐसा करो मैं आश्रम में जाती हूं वहां ब्रह्माकुमारी दीदी हैं, उन्हें मैं आपके बारे में बता दूंगी और आप थोड़ी देर के बाद आ जाना। दीदी को कहूंगी आपको राखी बांध देगी।

राकेश : ठीक है, प्रेरणा बहन, मैं घर से होकर आश्रम आता हूं। आप अच्छी तरह से मेरे बारे में बता देना।

प्रेरणा : अच्छा ठीक है, मैं जाती हूं।

तीसरा दृश्य

(आश्रम में प्रेरणा ब्र०कु० बहन के पास जाती है)

प्रेरणा : ऊँ शान्ति दीदी

ब्रह्माकुमारी : ओमशान्ति। आज बहुत जल्दी आ गई हो।

प्रेरणा : दीदी, मैंने जो एक लड़के के बारे में आपसे बात की थी वो गलत है। वो लड़का खराब नहीं।

ब्रह्माकुमारी : क्या, मैं समझी नहीं।

प्रेरणा : दीदी, आज वो मेरे से बात करने लगा तो मैंने उसे बहुत बुरा भला कहा। पर वो बेचारा डरते डरते एक ही बात कहता रहा।

ब्रह्माकुमारी : क्या कहता था वो ?

प्रेरणा : उसने कहा बहन, मेरी कोई बहन नहीं है, मैं तुझे धर्म की बहन बनाना चाहता हूं।

ब्रह्माकुमारी : अच्छा, तो फिर तूने क्या कहा।

प्रेरणा : मैंने कहा मैं तो अभी इस लायक ज्ञानवान बनी नहीं हूं लेकिन दीदी जी को कहूंगी वह ज्ञान भी समझा देंगी और राखी भी बांध देगी।

ब्रह्माकुमारी : दुनिया में सब आत्मा रूप में हमारे भाई हैं। सब शिवबाबा के बच्चे हैं।

(इतने में राकेश आता है)

प्रेरणा : वो राकेश भाई आ गया दीदी।

राकेश : नमस्ते-नमस्ते।

प्रेरणा : आइये, बैठिये राकेश भाई, यह हमारी दीदी हैं जो बहुत समय से ईश्वरीय सेवा पर रहती हैं। मैंने दीदी को आपके बारे में बताया है और कहा है अपने पवित्र हाथों से आपका राखी भी बांधे और रक्षाबन्धन का अर्थ भी समझायें।

ब्रह्माकुमारी : हां हां, हम आपकी बहनें हैं।

राकेश : सच, मैं कितना भाग्यशाली हूं जो आप जैसी महान ज्ञानवान बहनें मिली हैं।

प्रेरणा : अच्छा दीदी, राकेश को राखो बांधो ना।

ब्रह्माकुमारी : राकेश भाई. सबसे पहले मैं आपको यह बताती हूं कि ब्रह्मा इस सृष्टि का रचता है। शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया को रचते हैं। हम सब उनके बच्चे हैं। हम दो ही आपकी बहनें नहीं, दुनिया भर की बहनें इस नाते से आपकी बहने हैं।

राकेश : हां, यह तो ठीक है बहन।

ब्रह्माकुमारी : दूसरी बात राखी को रक्षाबन्धन क्यों कहते हैं, पता है ?

राकेश : क्यों कहते हैं बहन, आप ही सुनाओ।

ब्रह्माकुमारी : क्योंकि बहन भाई का पवित्र नाता है। इसमें पवित्रता अर्थात् ब्रह्मचर्य व्रत का पालन मुख्य है। पवित्रता से ही आप विश्व की रक्षा कर सकते हो। शिव परमात्मा कहते हैं—

राकेश : क्या कहते हैं ?

ब्रह्माकुमारी : शिवबाबा कहते, सबसे बड़ा बुद्धिमान और विश्व रक्षक वो है जो पवित्र रहता है। और खान-पान भी शुद्ध चाहिए।

प्रेरणा : खान पान का मतलब है कि मीट, शराब तम्बाकू आदि का सेवन नहीं करना, इसमें और भी कई बातें हैं।

राकेश : आपकी बातें सुनकर मुझे नई रोशनी मिली है। आज से मैं इन बुराईयों से दूर रहूंगा।

प्रेरणा : हां, राकेश भाई अभी दीदी से राखी बंधवाओ, फिर दीदी और भी ज्ञान की अच्छी अच्छी बातें सुनायेंगी।

(फिर दीदी और प्रेरणा राकेश को राखी बांधती हैं)

ब्रह्माकुमारी : प्रेरणा आप यह टेप चला दो इसमें रक्षाबन्धन का गीत भरा हुआ है। और मैं राखी बांधती हूं। आप आत्म-स्मृति का तिलक लगा देना। बाद में प्रसाद से राकेश का मुख मीठा करा देंगे।

प्रेरणा : हां, ठीक है दीदी, यह लो रक्षाबन्धन की थाली और मैं टेप चला दूं।

(प्रेरणा टेप चलाती है, गीत बजता है)

गीत आया राखी का त्योहार, बहना तुझे राखी बांधेगी

सुनो तो भइया जरा, बहना तुझे राखी बांधेगी।

१. आत्मा का शृंगार है राखी,
पवित्रता का हार है राखी,
रखना राखी की सम्भाल,
बहना तुझे राखी बांधेगी···

२. माया से रखना इसको बचाके,
राखी को रखना गले लगाके
राखी बाबा की है सौगात
बहना तुझे राखी बांधेगी।

(राखी के बाद राकेश कुछ रुपये ब्र० कु० बहन को देता है)

राकेश : दीदी यह लीजिए···

ब्रह्माकुमारी : यह क्या ? हम ऐसे तो किसी से कुछ लेते नहीं।

राकेश : दीदी आप तो बहुत सेवा करते हैं, हमारा भी कुछ सेवा में लगा देना।

ब्रह्माकुमारी : हमारा नियम है पहले हम जब तक आपकी सेवा नहीं करते, तब तक आपका कुछ भी लेने का हमें अधिकार नहीं। हां अगर आपकी इच्छा सेवा करने की है तो आप कई और प्रकार से सेवा कर सकते हैं।

राकेश : वो कैसे दीदी।

ब्रह्माकुमारी : देखो हमारा कई प्रकार का लिटरेचर है वह खरीदकर और आत्माओं को बांट सकते हैं।

राकेश : दीदी आप कितनी त्यागी हैं। आज मैं प्रतिज्ञा करता हूं बुराईयों से दूर रहूंगा और सदा पूर्ण पवित्र रहूंगा।

ब्रह्माकुमारी : राकेश शिवबाबा को ऐसे ही बच्चे चाहिए जो अपना और दूसरों का कल्याण करें। अच्छा अभी तो हमें किसी जगह सेवा पर जाना है, प्रेरणा मेरे साथ चलेगी और आप रोज़ आश्रम पर आया करना।

राकेश : अच्छा दीदी, ऊँ शान्ति, मैं कल आऊँगा।

(१० वर्ष बाद दीदी और प्रेरणा ब्रह्माकुमारी वेष में जेल की सेवा करने जाती हैं)

(दृश्य—जेल का)

(एक कैदी दूसरे को कुछ कहते हुए)

लखनसिंह : छोटू, सुन कितनी बार तुझे जेलर साहब ने बुलाया, तू आया नहीं। चल, जल्दी चल। सभी कैदियों ने राखी बंधवा ली है।

छोटू : मैंने राखी नहीं बंधवानी है। आप जेलर साहब को कह दो।

लखनसिंह : छोटू, तू मेरे साथ चल, वहां बहने बहुत अच्छी अच्छी ज्ञान की बातें सुनाती हैं।

छोटू : ज्ञान तो मेरी बहनें भी बहुत अच्छा सुनाती थीं। वह मुझे सारी आयु समझाती रहीं पर मैंने संग-दोष के कारण उनकी एक ना सुनी। अगर मैंने उनकी बातों पर ध्यान दिया होता तो आज मैं इस जेल में ना होता।

लखनसिंह : छोटू, बीती बातों को छोड़ो। आज के दिन अपना दिल खराब ना करो।

छोटू : मुझे अब और किसी से सारी आयु राखी नहीं बंधवानी है। अब जेल से रिहाई के बाद अपनी बहनों से ही राखी बंधवाऊँगा। और उनसे माफी मागूंगा। उनके बताये हुए रास्ते पर चलूंगा।

(जेलर और दोनो बहनें आती हैं)

लखनसिंह : लो, जेलर साहब बहनों को यहां ही ले आये हैं।

(छोटू दूसरी तरफ मुँह फेर लेता है)

छोटू : नहीं, नहीं, मुझे नहीं बंधवानी राखी। मैं कितना बदनसीब हूँ जो आज के दिन अपनी बहनों को कुछ भेज ना सका, वह क्या सोचती होंगी मेरे लिए।

जेलर : छोटू, तूने मुख को ढक दूसरी तरफ क्यों फेर लिया है देख, यह कितनी पवित्र बहनें हैं।

छोटू : माफ करना जेलर साहब, मुझे आप बार-२ मत कहना।

ब्रह्माकुमारी : यह कौन भाई है, यह राखी क्यों नहीं बधवाता है ?

जेलर : इसकी कैद लगभग पूरी हो चुकी है। इसे छोटू-२ कहते हैं, असली नाम इसका सुनील है।

प्रेरणा : सुनील !

(प्रेरणा लम्बी आवाज से कहती सुनील, तो छोटू पहचान लेता कि यह तो मेरे बहन की आवाज़ है)

सुनील : कौन ? यह तो मेरी बहन प्रेरणा आवाज जैसी लग रही है।

ब्रह्माकुमारी : मुख से हाथ तो हटाओ भाई, शायद यह आपकी बहन ही हो।

सुनील : दूसरी आवाज, कहीं दीदी तो नहीं।

(इतने में सुनील मुख बहनों की तरफ करता और आश्चर्य में)

ब्रह्माकुमारी : सुनील, आप ?

सुनील : दीदी आप ?

प्रेरणा : सुनील भइया, आप यहां ?

सुनील : दीदी, प्रेरणा, मुझे माफ कर दो। मैंने बचपन से आपकी बातें सुनी नहीं तो मेरी क्या हालत हो गई है।

जेलर : बहन जी यह मैं क्या देख रहा हूं ?

ब्रह्माकुमारी : बात यह है कि सुनील प्रेरणा का भाई है और बचपन से इसे कुछ दोस्त ऐसे मिल गये जो खराब आदतों वाले थे।

सुनील : दीदी, मैं बहुत दुखी हुआ हूं जो मैंने ज्ञान की बातें पहले ना सुनी। मुझे सदा आप और प्रेरणा की बातें याद आती रहती थी।

देखो दीदी मैंने बुरी आदतें सब छोड़ दी हैं।

जेलर : हां इसी कारण तो इसकी कैद भी कम गई है। यहां तो यह दूसरों को भी ज्ञान की बातें सुनाता है। और दूसरों को भी कई आदतें इसने छुड़ा दी हैं।

सुनील : दीदी, अब तो मैं ईश्वरीय सेवा ही करूंगा और सारा जीवन दूसरों को सुखी बनाने का कार्य करूंगा। किसी को दुःख नहीं दूंगा।

□

सच्ची स्वतंत्रता अर्थात रामराज्य

ब्र. कु. लीलाधर, भीलवाड़ा

मानव स्वभाव से ही स्वतन्त्रता-प्रेमी है। भारतीय संस्कृति के वाङ्मय में सच्ची स्वतन्त्रता का गायन "राम-राज्य" के रूप में है। रामराज्य के लिए गाया जाता है वहां घी-दूध की नदियां बहती थीं। भारत सोने की चिड़िया था। शेर और गाय भी एक घाट पर पानी पीते थे। इच्छा मात्रम अविद्या थी। यथा राजा तथा प्रजा किसी को किसी बात का अभाव एवं कोई भय नहीं था। अतः घरों को वहाँ ताला लगाने की ज़रूरत नहीं थी। सर्वत्र सुख-चैन की बंशी बजती थी। वहां सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, अहिंसा परमोधर्मः मर्यादा पुरुषोत्तम देवी देवताएं निवास करते थे। सर्वत्र सम्पूर्ण सुख, शान्ति, पवित्रता का स्वराज्य था। तभी आज भी लोग गाते हैं—"राम-राजा, राम-प्रजा, राम-साहुकार है, बसे नगरी जिये दाता धर्म का उपकार है।"

आज भारत देश को विदेशियों से स्वतन्त्रता पाये हुए ३६ वर्ष हुए हैं अब तक कितनी ही पंचवर्षीय योजनाएं बन चुकी हैं। कितनी ही बार देश की शिक्षा प्रणाली में हेर-फेर हुए हैं। जनता का शासन कितने ही हाथों में बदला है। कितने ही सामाजिक रीति-रिवाजों में परिवर्तन हुआ है, कितनी ही आर्थिक-नीतियों में बदलाव किया गया, और वैज्ञानिकों ने अब तक न जाने कितने ही आविष्कार कर भौतिक-दुनिया में चकाचोंध लाये हैं।

तो क्या गांधीजी के रामराज्य का सपना साकार हुआ है? भारतवासियों की सुख, शान्ति, सम्पन्नता को इच्छा पूर्ण हुई है? क्या घर-घर स्वर्ग बना है? क्या प्रजा और राज्याधिकारी सुख की नींद सोते हैं? क्या वर्तमान विनाशमय स्थिति से सभी सन्तुष्ट हैं? क्या बेरोजगारी दूर हुई है? क्या प्रजातन्त्र से राजनीतिक सुदृढ़ता देश में आई है? क्या धर्मनिरपेक्षता से भारत के लोग धार्मिक व आस्तिक रहे हैं? क्या वैज्ञानिकों के गगनचुम्बी आविष्कारों से शान्ति स्थापित हुई है?

इन सब बातों का उत्तर का सार यही निकलता है कि भारत को राजनीतिक स्वतन्त्रता तो मिली, परन्तु देश को विदेशी शत्रुओं के भय से, रोग और निर्धनता से, दुख और अशान्ति से एवं विकारों से स्वतन्त्रता नहीं हुई है। बेकारी, बीमारी एवं बुराइयां यहां से नहीं गई हैं। घी-दूध की नदियों की बात अलग रही, यहां दूध की आवश्यक पूर्ति भी पूरी नहीं होती। असली घी दुर्लभ है। रहने के लिए आवास की भी जटिल समस्या है। जनसंख्या वृद्धि के रूप में, पारस्परिक मतभेदों के रूप में अभी आपातकालीन देश की परिस्थिति है। इन सबका कारण स्वतन्त्रता के सच्चे अर्थ से सभी अनभिज्ञ हैं।

सच्ची स्वतन्त्रता तब होगी जब सभी स्व (आत्मा) को जान पहचान सकेंगे। जब स्वचिंतन करेंगे तो आत्मा का **स्वरूप, स्वदेश, स्वराज्य स्वधर्म, स्वलक्ष्य व स्वलक्षण** की बातें स्वतः जान जायेंगे। आज देहभान के कारण एवं इस देह से विलग, चेतन्य **ज्योतिबिन्दु** आत्मा को न जानने से गोरे काले, अपना-पराया, मोह-ममता, भाई-भतीजावाद एवं दोस्त-दुश्मन के जाल में मनुष्य उलझा हुआ है। **परमधाम** को न जानने के कारण आज मनुष्य इस मुसाफिरखाने की दुनिया को ही अपना स्थाई वास समझ बैठा है। जिससे उसमें संग्रह एवं जमाखोरी की प्रवृत्ति पड़ गई है। स्वर्गीय सम्पूर्ण सुख शान्ति सम्पन्न **दैवी-स्वराज्य** का ज्ञान न होने के कारण मनुष्य इस दुखधाम के दुखों का चिंतन कर दुखी बनता जा रहा है। आत्मा के **स्वधर्म-शान्ति और पवित्रता** को नहीं जानने से अपने आपको हिन्दु, मुस्लिम, सिख या ईसाई धर्म का मान बैठा है, जो कि देह के धर्म हैं, जिससे ही विश्व में धार्मिक वैमनस्यता एवं साम्प्रदायिक फूट पैदा हो उठी है। अपने लक्ष्य नर से नारायण एवं **मनुष्य से देवता** बनने का पुरुषार्थ करने के बजाय असुर बनता जा रहा है। स्व-लक्षण-**दिव्यगुणों की धारणा** के बजाय मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह, एवं अहंकारादि विकारों की दल-दल में फंसता जा रहा है।

अतः उपरोक्त रीति स्वचिन्तन कर, परमपिता परमात्मा शिव (जो कि विश्व के बापू हैं) की श्रीमत पर चल **पवित्र** एवं **राजयोगी** बनेंगे, तभी सच्ची स्वतन्त्रता वा राष्ट्रपिता गांधी जी के सपनों का रामराज्य साकार कर सकेंगे एवं विश्व में **एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा, एक मत, एक कुल** की स्थापना हो सकेगी। □

श्रीकृष्ण १६ कला महान और सुन्दर थे

भारत में आए दिन किसी न किसी महानुभाव का जन्म दिन मनाया जाता है। कभी गांधी जयन्ती, कभी तिलक जयन्ती, कभी महावीर जयन्ती, कभी नेहरू जी का जन्म दिन तो कभी राष्ट्रपति जी का जन्म दिन मनाया जाता है। इन व्यक्तियों और जयन्तियों पर विचार करने पर देखेंगें कि **इनमें से कई व्यक्ति तो केवल राजनीति ही के क्षेत्र में प्रतिभाशाली माने गये हैं और अन्य कई केवल धार्मिक क्षेत्र में। दोनों क्षेत्रों में समान रूप से किसी का प्रभुत्व रहा हो, ऐसा शायद कोई भी व्यक्ति नहीं मिलेगा। मिल भी जाय तो भी वह पूज्य कोटि का नहीं होगा।** परन्तु श्री कृष्ण, जिनका जन्मदिन भारतवासी हर वर्ष 'श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव' नाम से मानते हैं, के जीवन में आपको यही विलक्षणता स्पष्ट रूप से मिलेगी। श्री कृष्ण निर्विवाद रूप से एक अत्यन्त महान् **धार्मिक व्यक्ति भी थे और** उन्हें **राजनीतिक पदवी** अथवा प्राशासनिक कुशलता भी खूब प्राप्त थी। अतः श्री कृष्ण अपने चित्रों तथा मन्दिरों में सदैव **प्रभामण्डल** (प्रकाश के ताज) से सुशोभित तथा रत्न-जटित स्वर्णमुकुट से भी सुसज्जित दिखायी देते हैं। इसलिये मालूम रहे कि श्री कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव हमें धार्मिक और राजनीतिक दोनों सत्ताओं की पराकाष्ठा को प्राप्त श्री कृष्ण की याद दिलाता है। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव इसदृष्टिकोण से अनुपमेय है, क्योंकि **श्रीकृष्ण को तो भारत के राजा भी पूजते हैं और महात्मा भी महान् एवं पूज्य मानते हैं।**

श्रीकृष्ण जन्म ही से महान् थे

एक बात ध्यान देने के योग्य यह भी है कि दूसरे जो प्रसिद्ध व्यक्ति हुए हैं कि जिनके जन्म-दिन एक सार्वजनिक उत्सव बन गये हैं, वे कोई जन्म ही से पूज्य या महान् नहीं थे। उदाहरण के तौर पर **विवेकानन्द संन्यास के बाद ही महान् माने गये।** महात्मा **गांधी प्रौढ़ अवस्था में ही एक राजनीतिक नेता अथवा** एक सन्त के रूप में प्रसिद्ध हुए। यही बात तुलसी, कबीर, दयानन्द, वर्द्धमान महावीर आदि-आदि के बारे में भी कही जा सकती है। परन्तु श्री कृष्ण की यह विशेषता है कि उनके जन्म के समय भी उनकी माता को विष्णु चतुर्भुज का साक्षात्कार हुआ और वे

१६ कला सम्पूर्ण श्री कृष्ण तथा श्री राधे

जन्म ही से पूज्य पदवी को प्राप्त थे। आप उनके किशोरावस्था के चित्रों में भी उन्हें दोनों ताजों से से सुशोभित देखते होंगे। उन की बाल्यावस्था के जो चित्र मिलते हैं, उनमें भी वे मोर पंख, मणि-जटित आभूषण तथा प्रभामण्डल से युक्त देखे जाते हैं। आज भी जन्माष्टमी के दिन भारत की माताएँ पलने या पंगूरे में श्री कृष्ण की किशोरावस्था की मूर्ति या किसी चेतन प्रतिनिधिरूप बालक को लिटाकर उसे बहुत भावना से झुलाती हैं। आज भी श्री कृष्ण की बाल्यावस्था की झांकियां लोग बहुत चाव और सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। अन्य किसी भी प्रसिद्ध व्यक्ति को इस प्रकार **जन्म ही से** प्रभामण्डल से युक्त चित्रित नहीं किया जाता।

श्री कृष्ण १६ कला महान् और सुन्दर थे

यह भी एक सत्य तथ्य है कि अन्य जिन व्यक्तियों की जयन्तियाँ मनाई जाती हैं, वे १६ कला सम्पूर्ण

नहीं थे। केवल श्री कृष्ण ही सोलह कला सम्पूर्ण देव हुए हैं। श्री कृष्ण में शारीरिक आरोग्यता और सुन्दरता की, आत्मिक बल और पवित्रता की तथा दिव्य गुणों की अत्यन्त पराकाष्ठा थी। मनुष्य-चोले में जो सर्वोत्तम जन्म हो सकता है, वह उनका था। अन्य कोई भी व्यक्ति शारीरिक या आत्मिक दोनों दृष्टि-कोणों से इतना सुन्दर, आकर्षक, प्रभावशाली और प्रभुत्वशाली नहीं हुआ। सतयुग से लेकर कलियुग के अन्त पर्यन्त अन्य कोई भी इतना महान् न हुआ है, न हो सकता है। श्री कृष्ण का व्यक्तित्व इतना महान् और आकर्षक था कि यदि आज भी वह इस पृथ्वी पर कुछ देर के लिए प्रगट हो जायें तो क्या हिन्दु, क्या मुसलमान, क्या ईसाई, क्या यहूदी, सभी उनके सामने नत-मस्तक हो जायेंगे और मुग्ध होकर उनकी छवि निहारते खड़े रहेंगे।

श्री कृष्ण इतने महान् कैसे बने?

अब प्रश्न उठता है कि—जबकि श्री कृष्ण जन्म ही से महान् थे तो अवश्य ही उन्होंने पूर्व जन्म में कोई महान् पुरुषार्थ किया होगा।

श्रीमद्भागवत् में लिखा है कि श्री कृष्ण योगीराज थे; वह योगाभ्यास किया करते थे। परन्तु सोचने की बात है कि योगाभ्यास या अन्य कोई पुरुषार्थ तो किसी अप्राप्त सिद्धि की प्राप्ति ही के लिए किया जाता है, परन्तु श्री कृष्ण तो पूर्णतः तृप्त थे क्योंकि उन्हें धर्म, धन और जीवन्मुक्ति सभी श्रेष्ठ फल प्राप्त थे; सोलह कला सम्पूर्ण देवपद से भला और क्या उच्च प्राप्ति हो सकती थी कि जिसके लिए श्री कृष्ण योगाभ्यास करते? श्री कृष्ण के जीवन में तो किसी दिव्य गुण की, आत्मिक पवित्रता या शक्ति की या श्रेष्ठ भाग्य के अन्तर्गत गिनी जाने वाली अन्य किसी वस्तु, भोग्य, आयुष्य आदि की कमी ही नहीं थी कि जिसकी प्राप्ति के लिए वह योगाभ्यास करते। अतएव विवेक द्वारा तथा ईश्वरीय महावाक्यों द्वारा स्पष्ट है कि वास्तव में श्री कृष्ण ने अपने पूर्वजन्म में अर्थात श्री कृष्ण पद प्राप्त होने से पहले वाले जन्म में योगाभ्यास किया था।

उक्ति प्रसिद्ध है कि ईश्वरीय ज्ञान द्वारा "नर को श्री नारायण और नारी को श्री लक्ष्मी पद की प्राप्ति होती है।' तो स्पष्ट है कि श्री कृष्ण अपने श्री नारायण पद की प्राप्ति से पहले वाले जन्म में साधारण नर रहे होंगे और उसी जीवन में उन्होंने गीता-ज्ञान की धारणा की होगी और योगाभ्यास रूपी पुरुषार्थ किया होगा। लोग यह वाक्य भी प्रायः प्रयुक्त किया करते हैं कि 'न जाने नारायण किस साधारण रूप में आ जायं? इससे भी संकेत मिलता है कि श्री नारायण पहले साधारण रूप में आये होंगे और तब उन्होंने श्री नारायण पद दिलाने वाला पुरुषार्थ किया होगा।

अतएव आज लोग जब जन्माष्टमी का उत्सव मनाते हैं तो उन्हें इस ओर भी ध्यान देना चाहिए कि श्री कृष्ण ने गीता-ज्ञान तथा सहज राजयोग के अभ्यास द्वारा ही वह श्रेष्ठ पद प्राप्त किया था। परन्तु आज होता क्या है कि लोग श्री कृष्ण का गायन-पूजन तो करते हैं और उनकी महिमा तथा महानता का बखान भी करते हैं परन्तु जिस सर्वोत्तम पुरुषार्थ द्वारा उन्होंने वह महानता प्राप्त की थी। और पदमों-तुल्य जीवन बनाया था, उस पुरुषार्थ पर अथवा ज्ञान एवं योग रूप साधन पर वे ध्यान नहीं देते। वे यह नहीं सोचते कि श्री कृष्ण हमारे मान्य पूर्वज थे, अतएव हमारा कर्त्तव्य है कि हम उनके उच्च जीवन से प्रेरणा लेकर अपना जीवन भी वैसा उच्च बनाने का यथार्थ पुरुषार्थ करें।

लोग श्री कृष्ण की झांकियाँ तो तैयार करते हैं, परन्तु अपने जीवन में नहीं झांकते

जन्माष्टमी के दिन श्री कृष्ण के भक्त, उसकी झाँकियाँ तैयार करते और रथ पर उन झांकियों को नगर में घुमाते हैं। परन्तु वे यह नहीं सोचते कि श्री कृष्ण का जीवन झांकियों के योग्य बना किस आधार पर। श्री कृष्ण की झाँकी देखकर फिर अपने जीवन में नहीं झांकते यह नहीं देखते कि हमारे जीवन में अभी तक कितनी महानता आयी है? वे श्री कृष्ण को 'सुन्दर' कहते है परन्तु यह नहीं देखते कि हमारी आत्मा कितनी सुन्दर हुई है? वे श्री कृष्ण को १६ कला सम्पूर्ण मानते हैं परन्तु इस बात का चिन्तन नहीं करते कि हमारा अपना जीवन चढ़ती कला की ओर जा रहा है या उतरती कला की ओर? कृष्ण के नाम के साथ तो वे 'श्री' की उपाधि का प्रयोग करते हैं परन्तु हमारे अपने जीवन में कहाँ तक श्रेष्ठता आ पायी है'—इसका विचार वे नहीं करते। श्री कृष्ण की झांकियाँ तो लोग हर वर्ष निकालते हैं और कितने जन्मों से

निकालते ही आये हैं परन्तु आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने दामन की ओर भी झांक कर देखें कि उसमें कितने दाग़ हैं और फिर हम ईश्वरीय ज्ञान और योग द्वारा अपने जीवन को भी 'झांकियों के योग्य' अर्थात 'सुन्दर' बनायें।

श्री कृष्ण का जन्म-दिन तो आप मनाते हैं परन्तु आप अपना नया जन्म-दिन कब मनाएंगे ?

श्री कृष्ण का जन्म-दिन तो आप ने बहुत बार मनाया है और आप मनायेंगे भी परन्तु आप अपना **नये जन्म का दिन** कब मनाएँगे ? आप सोचते होंगे कि हमारा **नया जन्म** तो तब होगा जब शरीरान्त होने के बाद हम नया शरीर लेंगे, परन्तु वास्तव में हमारा भाव यह नहीं है। हम तो पुराने संस्कारों को बदल कर नये सतोगुणी संस्कार धारण करने की क्रिया 'नया जन्म लेना' मान रहे हैं। ऐसा नया जन्म तो जीते-जी मरने से होता है अर्थात पुरानी बातों को और पुराने संस्कारों को भुलाने से होता हैं। अब आप इस प्रकार का नया मानसिक जन्म मनाइये। केवल श्री कृष्ण को 'योगीराज' कहते रहने से मुख मीठा नहीं होगा बल्कि जब आप स्वयं भी योगीराज बनेंगे अथवा बनने का पुरुषार्थ करेंगे, आप का मुख तो तभी मीठा होगा। अतः जैसे लोग अपना शारीरिक जन्म-दिन मनाने के लिए अपने कुछ मित्र-सम्बन्धियों को आमन्त्रित करते हैं और उन सभी को यह सूचना होती है कि आज अमुक व्यक्ति का जन्म-दिन है, वैसे ही आप भी मित्र-सम्बन्धियों को तथा उनको भी जिनको कि आप अपना वैरी या विरोधी मानते रहे हैं, एकत्रित करके उनके सामने स्पष्ट घोषणा कीजिये कि अब हमारा नया जन्म हो गया है, अब हम पुराने बातों को अर्थात वैर-विरोध को, और मोह और लोभ आदि को भूल चुके हैं। अब हम स्वयं को उस परमपवित्र परमपिता परमात्मा की सन्तान निश्चय करते हैं, यही हमारा नया जन्म है, यही हमारे नये जीवन का नया सूत्र है। हम अब पवित्रता-पूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे, यही हमारे नये जीवन की विधि है।

श्री कृष्ण का आह्वान कैसे किया जाय ?

अतः श्री कृष्ण का आह्वान करने के लिये पहले तो इस भारत के वासियों के आहार-व्यवहार-विचार के शुद्धिकरण की आवश्यकता है। आज तो भारत में घर-घर में काम बसता है, सभी के मन में हराम अथवा 'दाम' बसता है। श्री कृष्ण के पधारने के लिये तो कोई जगह ही खाली नहीं है, कोई सिंहासन ही नहीं है। सभी के हृदय रूपी सिंहासन पर किसी-न-किसी विकार का अधिकार जमा हुआ है, तब एक नगर के दो राजा कैसे हो सकते हैं ?

श्री कृष्ण को तो अशुद्ध हाथ छू तक भी नहीं सकते, उस पर अपवित्र दृष्टि नहीं पड़ सकती, अपवित्र वृत्ति वाले लोग उसके पास नहीं पहुँच सकते विकारी व्यक्ति के हाथ उसके लिये भोजन नहीं बना सकते और मलेच्छ स्वभाव के नर-नारी तो उसके दास-दासी या किंकर-भृत्य भी नहीं बन सकते। अतः श्री कृष्ण का आप लाख बार आह्वान कीजिये परन्तु जब तक नर-नारी का मन-मन्दिर नहीं बना है, जब तक यहाँ दिव्य गुणों की अगरबत्ती से वातावरण सुगन्धित नहीं हुआ है, जब तक यहां उनका मन ज्ञान द्वारा आलोकित नहीं हुआ है तब तक श्री कृष्ण जो कि देवताओं में भी श्रेष्ठ और शिरोमणि हैं, यहाँ नहीं आ सकते।

आज लोग जन्माष्टमी का उत्सव मनाते हैं तो बिजली के सैंकड़ों बल्ब जलाकर खूब उजाला करने का यत्न करते हैं। परन्तु आज आत्मा रूपी बल्ब तो फ़्यूज़ हो चुका है ! आज बाहर तो रोशनी की जाती है परन्तु स्वयं आत्मा रूपी चिराग़ के तले अन्धेरा है और उस अन्धेरे में विकार रूपी चोर छिपे बैठे हैं। अतः आज आवश्यकता है नव-चेतना की, अपने जीवन के नव-निर्माण की, अपने प्राणों में नव-प्राण की, अपने घर-गृहस्थ में नये विधि-विधान की, नए एवं उज्जवल विचारों की, जीवन में नई उमंग और नयी तरंग पैदा करने वाली एक नयी तान की। तब यहाँ नयी ज़मीन और नया आसमान बनेगा, नया समाज और नया इन्सान बनेगा, नयी दुनिया और नया जहान बनेगा, उस नये विधान में नये तरीके से श्री कृष्ण का शुभ-आगमन होगा, सुखद आगमन होगा, स्वर्गिक शासन होगा।

आध्यात्मिक सेवा समाचार

ब्र० कु० श्रीराम, ब्र० कु० सत्यनारायण, कृष्णा नगर दिल्ली द्वारा संकलित

पिछले मास की भांति इस मास भी भारत के कोने कोने से ईश्वरीय सेवाएं भिन्न भिन्न साधनों से की गईं। कुछ समाचार निम्न हैं :—

डिबरूगढ़ सेवाकेन्द्र के स्थानान्तरण के उपलक्ष्य में पास के ही हाल में राजयोग विश्व शांति आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसके साथ-साथ राजयोग फिल्म तथा राजयोग शिविर का भी कार्यक्रम रखा गया। प्रदर्शनी को लगभग ७००० आत्माओं ने देखा तथा अनेक आत्माओं ने राजयोग शिविर से लाभ उठाया।

अंकोला सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि होन्नावर तथा अंकोला सेवा केन्द्रों के संयुक्त प्रयास से गोकर्ण में विश्व नव निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, केरल, मद्रास तथा कर्नाटक के कोने-कोने से आए हुए भक्तों ने, होमगार्ड पुलिस, पुलिस अधिकारियों ने तथा स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने १५ दिन तक प्रदर्शनी से लाभ उठाया।

बटाला सेवाकेन्द्र की ओर से गुरुनानक नगर में ८ दिन के लिए योग शिविर-ज्ञान शिविर का कार्यक्रम तथा चार दिन के लिए प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया। शहर के १५ प्रमुख डाक्टर्स की व्यक्तिगत सेवा भी की गई।

सेंधवा सेवा केन्द्र की ओर से ओझर गांव में १० दिन के लिए विश्व नवनिर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई, जिसका उद्घाटन गांव के नामीग्रामी सेठ किशोरी लाल जी गोयल ने किया।

बंगलौर (शिवाजी नगर) सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि गत मास में "विश्व-शांति योगदान" के दिवस पर भूतपूर्व उपराष्ट्रपति भ्राता बी० डी० जत्ती जी उपस्थित हुए तथा उन्होंने युनिवर्सल पीस कांफ्रेंस, के अवसर पर माउंट आबू में प्राप्त किए अपने अनुभव सुनाए।

भीलवाड़ा सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि मांडल तहसील में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन नगर के प्रमुख व्यक्ति एवं संयुक्त राष्ट्र संघ के सलाहकार भ्राता रविशंकर शर्मा द्वारा सम्पन्न हुआ।

मुजफ्फरपुर सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि रेलवे कालोनी में आनन्द फिल्म तथा प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया, जिसका उद्घाटन स्थानीय जिला अधिकारी भ्राता अरुण कुमार रथ जी ने किया। इसके अतिरिक्त स्थानीय सदर हास्पीटल में भी आनन्द फिल्म, राजयोग फिल्म व प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

बीदर सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि देगलूर में 'शांति प्रदायक प्रदर्शनी" का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन वहां के कलैक्टर भ्राता बी० एस० बोर्डे जी ने किया। उन्होंने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा—कि आज के विश्व को अनैतिकता के वातावरण में, चरित्र उत्थान के लिए यह प्रदशनी का माध्यम बहुत

सिकन्द्राबाद (आ० प्र०) सेवा केन्द्र के वार्षिकोत्सव के अवसर पर मंच पर उपस्थित हैं डा० साई कुमार (सम्बोधन करते हुए) भ्राता एच० पी० मिस्त्री (अध्यक्ष), ब्र० कु० लीला, ब्र० कु० सरोज, सावित्री तथा ब्र० कु० गुरुचरण जी।

सराहनीय है ।

अंजार सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि टाउन हाल में परिवार कल्याण विभाग द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में प्रवचन का निमंत्रण मिला । जिसमें लगभग २०० आत्माओं को ईश्वरीय संदेश मिला । इसके अतिरिक्त लीलाशाह नगर, गोपालपुरी, इफको कालोनी, भुज सेंट्रल जेल में प्रवचनों के कार्यक्रम चले ।

जयपुर सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि टोंक के प्रसिद्ध रामाकृष्ण मंदिर में पांच दिन के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा योगशिविर का आयोजन किया गया ।

दार्जिलिंग सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि दार्जिलिंग तथा सिलिगुड़ी के बीचों-बीच स्थित कर्सियांग ब्लूम फिल्ड लायब्रेरी में चार दिन के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया । उद्घाटन तथा समाप्ति के दिन सार्वजनिक फंकशन भी रखा गया । पास में ही एक धर्मशाला लेकर सत्संग, आनन्द फिल्म, राजयोग फिल्म, कलकत्ता मेले की फिल्म तथा योगशिविर का भी कार्यक्रम रखा गया ।

कोननगर सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि गर्मियों की छुट्टियों में सेंटर के पास के स्कूल में तथा काली मंदिर के सामने वाले स्कूल में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी लगाई गई, जिनसे हजारों आत्माओं को श्रेष्ठ जीवन बनाने की प्रेरणा मिली ।

टिपटूर सेवा केन्द्र की ओर से विश्व शांति मेले का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन नगर के एम० एल० ए० साहिब ने किया । प्रदर्शनी से लगभग ३०,००० आत्माओं ने लाभ उठाया । योगशिविर से भी ३०० आत्माओं ने ईश्वरीयानुभूति की ।

जगाधरी सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि गत मास नारायण गढ़ में राधा स्वामी संस्था की ओर से आयोजित मानव एकता सर्वधर्म सम्मेलन में संस्था की ओर से प्रवचन किया गया, जिसमें बताया गया कि जब तक हमें स्वयं की तथा अपने बाप की पहचान नहीं तब तक मानव एकता नहीं हो सकती । राधा स्वामी संस्था के परम संत लज्जा राम जी ने इस ज्ञान की बहुत सराहना की और आगे के लिए हमारी संस्था का सहयोग मिलते रहने का वचन लिया ।

राजगढ़ सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि यहाँ की सेंट्रल जेल के जेलर को प्रदर्शनी समझाई गई, जिससे प्रभावित होकर उन्होंने अपनी जेल में प्रवचन का कार्यक्रम रखा । लगभग ६० कैदी तथा १५ पुलिस कर्मचारी उपस्थित थे । सभी ने बुराई छोड़कर दिव्य जीवन बनाने की प्रेरणा ली ।

बिलासपुर सेवा केन्द्र की ओर से गत माह शहर के विभिन्न स्थानों पर सुख-शांति-प्रदायक आध्यात्मिक प्रदर्शनी, प्रवचन, गीत-संगीत आदि का आयोजन किया गया, जिससे हजारों आत्माओं ने लाभ उठाया ।

कृष्णानगर (दिल्ली) सेवा केन्द्र की ओर से रघुबरपुरा नं० २ में जैन धर्मशाला के अन्दर तीन दिन के लिए "चरित्रनिर्माण तथा राजयोग प्रदर्शनी" का आयोजन किया गया । जिसका उद्घाटन सदस्य नगर निगम भ्राता

रतलाम में आयोजित राजयोग आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन नगर में वरिष्ट उद्योगपति भ्राता शिव कुमार झालानी ने किया । ब्र० कु० आशा, भ्राता रामेश्वर अग्रवाल तथा अन्य साथ में हैं ।

मुकुन्दलाल जी बिन्द्रा ने किया। एक दिन के लिए "बाल प्रदर्शनी" भी लगाई गई जिसका उद्घाटन महानगर पार्षद भ्राता दर्शनकुमार जी बहल ने किया। साथ-साथ राजयोग शिविर का भी आयोजन किया गया।

माजलिस पार्क (दिल्ली) सेवाकेन्द्र की ओर से पंचवटी, आदर्श नगर, केवल पार्क, सूरज नगर, भड़ोला गाँव, गंगली, पूना गाँव, लिबासपुर गाँव, सिरसपुर गांव तथा आजादपुर गांव आदि स्थानों पर "शिवदर्शन प्रदर्शनी" लगाई गई। आजादपुर के शिव मंदिर में माताओं के लिए सतसंग का कार्यक्रम भी रखा जाता है।

लारेंस रोड (दिल्ली) सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि वहां के स्थानीय पार्क में सप्ताह में दो दिन चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। इसके अतिरिक्त अशोक विहार फेज II गुजरांवाला टाउन में तथा नया बांस नामक गांव में में भी आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

त्रिनगर (दिल्ली) सेवा केन्द्र की ओर से निकटवर्त्ती शास्त्री नगर में एक सप्ताह के लिए प्रदर्शनी लगाई गई जिसे सभी वर्गों के लोगों ने रुचि पूर्वक देखा। सायं को माताओं के लिए सत्संग का भी कार्यक्रम चलता रहा।

बड़नगर सेवा केन्द्र की ओर से नगर के प्रसिद्ध राम मंदिर में एक राजयोग आध्यात्मिक प्रदर्शनी का एक सप्ताह के लिए आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन नगर के सत्र न्यायाधीश भ्राता शेर सिंह मंसारे जी ने किया। उन्होंने अपने विचारों में बताया कि आत्मिक शुद्धि के लिए यह प्रदर्शनी उत्तम है।

आगरा सेवाकेन्द्र की ओर से निकटवर्त्ती खांडा गांव में तीन दिन के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी, प्रवचन और नाटक का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके अतिरिक्त शाहगंज (आगरा) उपसेवा केन्द्र में स्कूल व कालेज की कन्याओं की ६ दिन के लिए "ज्ञान-योग ट्रेनिंग" रखी गई अन्त में पेपर भी लिया गया और फर्स्ट नं० वाली कन्याओं को इनाम भी दिए गए।

शिवसागर सेवा केन्द्र से समाचार मिला है कि शिवसागर को जिला घोषित करने के उपलक्ष्य में असम के मुख्य मंत्री भ्राता हिदेश्वर सइकिया जी पधारे, जिनके साथ डिप्टी मिनिस्टर तथा फारेस्ट मिनिस्टर भी आए। ब्रह्माकुमार भाई-बहिनों ने सरकट हाउस में उनसे मुलाकात की तथा उन्हें सर्व आत्माओं के पिता का परिचय, संस्था की गतिविधियों तथा मानव के भविष्य के बारे में अवगत कराया।

नैनीताल सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि तल्लीताल धर्मशाला में तथा बाजार तल्लीताल जूनियर हाई स्कूल में तीन-तीन दिन के लिए चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी, प्रवचन, ड्रामा के कार्यक्रम रखे गए।

देहरादून सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ हैं कि शिक्षा विभाग चमोली के सहयोग से रुद्रप्रयाग, गोचर, लंगासू, गोपेश्वर ग्राम कोडिया, बड़गांव, जोशीमठ, बद्रीनाथ, श्रीनगर, कोटद्वार में प्राथमिक जूनियर हाई स्कूल एवं माध्यमिक विद्यालयों तथा सार्वजनिक स्थानों में प्रवचनों, चित्रों एवं विश्व नवनिर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी के कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनसे स्थानीय जनता,

अम्बाला कैन्ट में ओरियन्टल फैक्ट्री में हुई उद्योग प्रदर्शनी में ब्र० कु० प्रभा, भ्राता महेन्द्र गुप्ता जी को चित्रों की व्याख्या देते हुए। ब्र० कु० आशा तथा अन्य साथ में खड़े हैं।

छात्र-छात्राएं, अध्यापक वर्ग की आत्माएं लाभान्वित हुई।

सांगली सेवा केन्द्र की ओर से समाचार प्राप्त हुआ है कि वहां का वार्षिक उत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री भ्राता बसन्त दादा पाटिल ने विश्वविद्यालय के कार्यों की सराहना करते हुए बताया कि यह विद्यालय समाज में उच्च नैतिकता के निर्माण का बहुत ही अच्छा कार्य कर रहा है जिससे स्वयं का तथा सर्व का कल्याण हो रहा है।

मोरवी सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि बम्बई से डा० गिरीश पटेल के आने पर सिविल हस्पताल के डाक्टर्स का सम्मेलन बुलाया गया, जिसमें ४० डाक्टर्स तथा ३५ वकील व जज शामिल हुए। इसके अतिरिक्त निकटवर्ती स्थानों सनाला, जोधपुर, पिपड़ी, विरपर, लालपर, भावपर आदि स्थानों पर आध्यत्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। खास मोरबी शहर में भी जनकल्याण, लालबाग दाऊदी प्लेट, राज सोसायटी, बैंक कालोनी, कडीयाशेरी, नागपरा, कालकाप्लेट, नया बस स्टैंड, विवेकानन्द स्कूल, नडियाड आदि स्थानों पर प्रोजेक्टर-प्रदर्शनी के कार्यक्रम किए गए।

बलसार सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में चैतन्य झांकी सजाकर शहर में से शोभा यात्रा निकाली गई। इसके साथ ही विश्व शांति सम्मेलन का भी आयोजन किया गया। जिसमें बम्बई से ब्र० कु० ऊषा जी, सूरत से प्रो० अंजनि बेन पारेख, बलसार विज्ञान-कालेज के रसायन विभाग के प्रो० नागर जी देसाई, बलसार के कलैक्टर श्रीमती मृदुला बेन वशी तथा अहमदाबाद से ब्र० कु० हंसमुख भाई ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए।

जींद सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि माउंट आबू में योगशिविर करके आए भाइयों का स्नेह मिलन रखा गया। जिसमें प्रतिष्ठित व्यक्तियों के अनुभव सुनकर अनेक आत्माओं ने राजयोग मार्ग को अपनाने की प्रेरणा ली।

बरनाला सेवा केन्द्र की ओर से तप्पा मंडी में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। साथ-साथ योगशिविर का आयोजन किया।

बड़ौदा सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि छाणी विस्तार, उडेरा गांव, करजण गांव, मियाँ गांव तथा नीलकंठ महादेव के मंदिर में प्रदर्शनी, प्रवचन, प्रोजैक्टर शो, ज्ञान शिविर योगशिविर तथा प्रभात फेरी के विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए।

हिम्मतनगर सेवाकेन्द्र की ओर से मेघरंज गीता पाठशाला के प्रथम वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में **सर्व धर्म सम्मेलन** का आयोजन किया गया। जिसमें क्रिश्चियन धर्म के फादर ए० डी० फोन्सेका तथा मुस्लिम धर्म के भ्राता हाफिज हबीबुल्लाखान तथा अन्य धर्म की अनेकानेक आत्माओं ने भाग लिया। इस अवसर पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी, प्रवचन तथा चैतन्य झांकी का भी आयोजन किया गया।

खेड ब्रह्मा सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है माता जी के मंदिर में पूनम के भव्य मेले में एक स्टाल लगाया गया जिसमें चैतन्य झांकी तथा प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

कुणिगल सेवा केन्द्र की ओर से एक सप्ताह के लिए मिनी मेले का आयोजन किया गया। जिसके अन्तर्गत सर्व धर्म-सम्मेलन, शिक्षक-सम्मेलन, महिला-सम्मेलन, युवावर्ग-सम्मेलन भी रखे गए। शोभा यात्रा भी निकाली गई। मेले के साथ-साथ कई स्कूल-कालेजों, मंदिरों, रोटरी तथा लायंस क्लब में प्रवचन के कार्यक्रम रखे गए।

इन्दौर स्थित अभ्यास मण्डल द्वारा "लोकमान्य विचार माला" का उद्घाटन-भाषण देती हुई ब्र० कु० आरती जी।

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक बी 9/19 कृष्णनगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा संगम प्रिंटिंग सर्विस कं० शाहदरा दिल्ली-32 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D. (E)—70